॥ श्रीः ॥

[redacted]

महात्रिपुरसुन्दरीवरिवस्याविधिः

सर्व सिद्धि दायकम्

卐 श्री यन्त्रम् 卐

पश्चिम

लं लघिमा सिद्धि

दक्षिण

महिमा सिद्धि

उत्तर

ईं ईशित्व सिद्धि

पूर्व

अं अणिमा सिद्धि

226.8
त्रिपा/अ/म

सम्पादकः

डॉ० अविनाश नाथ त्रिपाठिः

एम० ए, संस्कृत, दर्शन, पो-एच० डो०, योगतन्त्राचार्य

प्राध्यापकः, योगतन्त्रस्य, सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्व-विद्यालयः

घोषणा पत्र

1- पुस्तक का नामः- महात्रिपुरसुन्दरी वरिवस्याविधिः

2- विषयः- योग तन्त्र

3- लेखक का नाम और पता :- डा. अविनाश नाथ त्रिपाठी
प्राध्यापक, योग तन्त्र
सांख्ययोगतन्त्रागम विभाग,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

4- लेखक का प्रमाण पत्र :-

मैं प्रमाणित करता हूँ कि (क) मेरी उपर्युक्त रचना मौलिक प्रथम बार वर्ष 1996 में प्रकाशित हुई है। (ख) मैं मूलतः उत्तर प्रदेश का निवासी हूँ। (ग) मैं सांख्ययोगतन्त्रागम, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हूँ।

दिनांक 20-9-96

अविनाश नाथ त्रिपाठी
अविनाश नाथ त्रिपाठी

।। श्रीः ।।

[redacted]

महात्रिपुरसुन्दरीवरिवस्याविधिः

सम्पादकः

डॉ० अविनाश नाथ त्रिपाठिः

एम०ए, संस्कृत, दर्शन, पी-एच०डी०,

योगतन्त्राचार्य

प्रा प्रध्यापकः, योगतन्त्रस्य

सम्पूर्णानन्द-संस्कृत-विश्व-विद्यालयः

प्रकाशकः

आराधना प्रकाशन

विन्द भवन, कमच्छा वाराणसी – २२१०१० (भारत)

प्रकाशकः

आराधना प्रकाशन

विन्द भवन, कमच्छा [redacted]

वाराणसी – २२१०१० (भारत)

226.8
त्रिपा/अ/म

प्रथम संस्करण – १९९६

मूल्य – १०० रूपये मात्र

© प्रकाशक

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान
पुस्तकालय
ग्रन्थ परि० सं० 13652
संस्कृत भवन लखनऊ

मुद्रक :

देव कम्प्यूटर सेण्टर अस्सी, वाराणसी – २२०००५

प्राक्कथन

'आदि शक्ति जेहिं जग उपजाया'- जिस आदि शक्ति से चराचर जगत् की सृष्टि हुई है एवं जिस शक्ति के विना रंचमात्र भी स्पन्दन नहीं हो सकता, उसी पराम्बाभगवती के विविध नाम व स्वरूपों की परिकल्पना की गयी है। अनादि काल से ही देव, दानव, ऋषि, मुनि आदि सभी उसी आदिशक्ति की आराधना करके, अपने-अपने अभीष्ट की प्राप्ति करके कृतकृत्य हो गये है। महात्रिपुर सुन्दरी उन्हीं आदि शक्ति पराम्बा भगवती का एक नाम है। युगों से इनकी उपासना का क्रम चला आ रहा है।भगवान् दत्तात्रेय, नारद, दुर्वासा, लोपामुद्रा आदि के द्वारा इनका क्रमिक प्रादुर्भाव एवं प्रवर्त्तन हुआ। परवर्त्ती अनेक आचार्यों ने भगवती की उपासना के दार्शनिक एवं व्यावहारिक दोनों पक्षों का परम्परागत ढंग से प्रतिपादन करते हुये साधना का एक स्वरूप प्रस्तुत किया, जिस पर अमल करके अनेक साधक अपने पुरुषार्थ प्राप्ति में सफल हो गये।

सम्प्रति श्रीविद्योपासना सम्बन्धी अनेक आधार ग्रन्थों का प्रणयन उपलब्ध है, जिनमें नित्याषोडशिकार्णव, योगिनी हृदय,वरिवस्या रहस्य, त्रिपुरार्णव आदि मुख्य हैं। इन ग्रन्थों में मातृकास्वरूप विमर्श, पीठ स्वरूप, मुद्रास्वरूप, चक्रमयीसृष्टि, चक्रस्थ आवरण देवता, नित्याषोडशनाम, नवयोनिचक्र, अन्तर्दशार बहिर्दशार, चक्रराज महिमा, वशिन्याष्ट निरूपण, गुरुमण्डल,मूलविद्योद्धार, षडङ्ग-न्यास, त्रिखण्डमुद्रा एवं त्रिपुराविद्यामाहात्म्य आदि विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

आद्य शंकराचार्य ने पराम्बा की उपासना का स्वरूप अपनी स्वरचित सौन्दर्यलहरी" में प्रदर्शित किया। प्रातः स्मरणीय स्वामी करपात्री जी ने श्रीविद्योपासना के सर्वाधिक महत्व को अंगीकार करते हुये इनकी आराधना पर विशेष बल दिया और श्रीविद्योपासकों के लिए पराम्बा की अर्चनात्मक पद्धति को प्रस्तुत किया। श्री-विद्यारत्नाकर में विस्तृत विवरण उपलब्ध होता है। नित्योत्सव एक ग्रन्थ है, जिसमें

श्रीविद्योपासना की पद्धति का उल्लेख हुआ है। इन सन्दर्भ ग्रन्थों के अनुशीलन के पश्चात् ही इस प्रवन्ध को प्रस्तुत किया जा रहा है। महात्रिपुरसुन्दरी वरिवस्या विधिः" नामक सम्पादित प्रस्तुत ग्रन्थ श्रीविद्योपासना के मात्र अर्चनपूजन की एक आवश्यक संक्षिप्त पद्धति का प्रकाशन है। इसमें कुल आठ पटल हैं। यह लघु ग्रन्थ नृसिंहानन्द नाथ के शिष्य भासुरानन्द नाथ की पाण्डुलिपि का प्रकाशन है, जो शक १७३३ में लिखी गयी थी। इसकी लिपि देवनागरी थी। पाण्डुलिपि नं.२४८०३ पत्र सं.७८, आकार ८.३. X४, पंक्ति सं.५ एवं प्रत्येक पंक्ति में अठारह अक्षर थे । उनकी यह पाण्डुलिपि अब तक अप्रकाशित रही। विद्वद प्रवर साहित्यकार पूर्व कुलपति (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय, वाराणसी) माननीय डॉ० विद्यानिवास मिश्र जी की सद् प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से प्रवृत्त होकर हमने इस पाण्डुलिपि को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालय के सरस्वती भवन से प्राप्त किया। तदनन्तर तन्त्र साहित्य के विद्वान् आचार्य पं० ब्रजबल्लभ द्विवेदी जी से कुछ आवश्यक निर्देश मिला। इस प्रकार इसका सम्पादन करके सम्प्रति विद्वद् वृन्द एवं साधकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। यदि विद्वद् वृन्द एवं साधकों को लिये यह किञ्चित् सार्थक सिद्ध हो सका, तो हम अपने प्रयास को सफल समझेंगे।

अविनाश नाथ त्रिपाठी

श्रावणी पूर्णिमा

संवत् २०५३

भूमिका

'महात्रिपुरसुन्दरी वरिवस्याविधिः' आद्योपान्त कर्मकाण्ड है । इसे संशोधित करके ही प्रकाशित किया गया है। उक्ति है कि देवो भूत्वा देवं यजेत् अर्थात् देव होकरके ही देव का यजन करे। देव वनने का तात्पर्य यहाँ यह है कि देवता के विभिन्न मन्त्रों द्वारा शरीर के सभी अंगों पर न्यास करके स्वयं को देवमय अनुभव करना। अतः तन्त्रों में न्यास का अत्यधिक महत्त्व है।न्यास के द्वारा शरीर दिव्य हो जाता है। शरीर को दिव्य बनाने के पश्चात् ही साधना फलवती होती है। त्रिपुर सुन्दरी की उपासना में भी न्यास पर अधिक बल दिया गया है।

यह लघुग्रन्थ अष्टपटलात्मक है। ग्रन्थ के प्रथम पटल में श्रीगुरुदेव का ध्यान है। सर्व प्रथम ब्रह्ममुहूर्त्त में उठकर श्रौत आचमन एवं भस्मधारण करके श्रीगुरुदेव का स्मरण करने का निर्देश है। तत्पश्चात् वैदिक एवं तान्त्रिक स्नान करके गुरुपादुका स्तोत्र का पाठ करें। इनकी बहुत बड़ी महिमा बताई गयी है। द्वितीय पटल में बज्रपंजरात्मक भस्मधारण का विधान है। इसमें वाग्वादिनी, ज्वालामालिनी, अघोरमन्त्र, नृसिंहमन्त्र एवं दुर्गा आदि मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित करके भस्म धारण करने का विधान है।

तृतीय पटल में तान्त्रिक सन्ध्या है। इसमें संकल्पपूर्वक शरीरांगो पर न्यास करके मूल गायत्री के जप का निर्देश किया गया है। चतुर्थ पटल में नव नाथपारायण है। तत्पश्चात् प्रातः सन्ध्या, मध्याह्न सन्ध्या, सायं सन्ध्या एवं अर्द्ध रात्रि सन्ध्या का विधान है।

पंचम पटल में भूतशुद्धि है। इसके अन्तर्गत शरीर के विभिन्न अंगो में स्थित देवता एवं उनके बीज मन्त्रों का स्मरण है।

षष्ठ पटल में प्राण प्रतिष्ठा है। सप्तम में श्रीगणेशादि षोढ़ान्यास है। इसके अन्तर्गत ग्रह न्यास, नक्षत्रन्यास, योगिनी न्यास, पीठन्यास, राशिन्यास, लघुषोढ़ा न्यास का उल्लेख है।

अष्टम पटल में चक्र न्यास, चक्रेश्वरी न्यास, अक्षर न्यास, संहार, सृष्टि, स्थिति आदि न्यासों का उल्लेख है।

इस प्रकार यह लघुग्रन्थ अपने संक्षिप्त कलेवर में अनेकविध न्यासों एवं मन्त्रों को समेटे हुये है। हमने यथा सम्भव इनका संशोधन, संयोजन करके व्यवस्थित ढंग से उपस्थापन किया है। आशा है कि पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

अविनाश नाथ त्रिपाठी

विषयानुक्रमणिका

पटल सं०	विषय	पृष्ठ सं०
प्रथम पटल –	श्रीगुरुध्यानम् –	१
द्वितीय पटल –	वज्रपंजरात्मक भस्मधारणम् –	६
तृतीय पटल –	तान्त्रिक संन्ध्या –	९
चतुर्थ पटल –	नाथ पारायणम् –	१४
	चक्रेश्वरी परायणम् –	१५
	नाड़ी पारायणम् –	१६
	मध्याह्न संन्ध्या –	१७
	सायं सन्ध्या –	२०
	अर्ध रात्रि सन्ध्या –	२३
पंचम पटल –	भूत शुद्धि –	२६
षष्ठ पटल –	प्राण प्रतिष्ठा	३२
सप्तम पटल –	श्री गणेशादि षोढ़ान्यास –	३५
	ग्रहन्यास, नक्षत्र न्यास –	३९
	योगिनी न्यास –	४१
	राशि न्यास –	४५
	पीठ न्यास –	४६
अष्टम पटल –	चक्र न्यास –	४९
	करशुद्धि न्यास –	५९
	वाग्देवता न्यास, नवयोनिन्यास –	६०
	विद्याक्षर न्यास –	६१

श्रीकण्ठादि न्यास – ६२

महाषोढा न्यास – ६५

सौभाग्यादि द्वादशन्यास, त्रैलोक्य
क्षोभण न्यास सम्मोहन न्यास,
अक्षर न्यास संहार न्यास – ६७

सृष्टि न्यास – ६८

स्थिति न्यास, सौभाग्य न्यास,
मुखकर न्यास – ६९

मुखपाद न्यास, वक्रन्यास,
महासौभाग्य न्यास – ७०

अष्टाक्षर बाला मन्त्र, सुमुखी एवं
उग्रतारा मन्त्र – ७१

प्रथमो पटल:

श्रीगुरुध्यानम्

श्रीगणेशाय नमः । श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। ब्राह्मे मुहुर्त्ते उत्थाय भस्मधारणं श्रौताचमनं च कृत्वा —

ब्रह्मरन्ध्रे निजगुरुं शक्तियुतं स्मरेत् ।
सहस्त्रदलपंकजे सकलशीतरश्मिप्रभम्
वराभयकराम्बुजं विमलगन्धपुष्पांबरम् ।।
प्रसन्नवदनेक्षणं सकलदेवतारूपिणम् ।
स्मरेदुरसि हंसगं तदभिधानपूर्वं गुरुम् ।

शिरसि पादुकामुद्रां बध्वा पादुकामन्त्रममुकानंदनाथगुरुं अमुकशक्त्यंबा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

इत्येवं गुरुत्रयं स्मृत्वा तत्पादगलितधारया प्लुतमात्मानं निर्मलानन्दमयं विभाव्य सुमुखवृत्तचतुरस्रयोन्याख्यपंञ्चमुद्राभिर्नमस्कृत्य स्तुवीत ।

नमस्ते नाथ भगवन् शिवायगुरुरूपिणे ।
विद्यावतारसंसिध्यै स्वीकृतानेकविग्रह ।।१।।
नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे ।
सर्वज्ञानतमोभेदभावेन चिद्घनायते ।।२।।
स्वतंत्राय दयाक्लृप्तविग्रहाय शिवात्मने ।
परतन्त्राय भक्तानां भव्याय भव्यरूपिणे ।।३।।

विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ।

प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानविज्ञानरूपिणे ।।४।।

पुरस्तात्पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः ।

सदामच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनं ।।५।।

इत्येवं पंचभिःश्लोकैः स्तुवीत यतमानसः ।

प्रातः प्रबोधसमये जपात्सुदिवसं भवेत् ।।६।।

इति गुरुध्यानम् ।

ततो मूलाधा राद्यनाहतांतं वाग्भवकूटमग्निप्रभमनाहतादाज्ञांतं कामराजकूटंसूर्य–प्रभमाज्ञादिब्रह्मरन्ध्रांतं शक्तिकूटं चन्द्रप्रभं ध्यायेत् ।।

(इति कूटध्यानम्)

ततो मूलाधारादि-ब्रह्मरन्ध्रांतं दण्डाकारारुणतेजोरूपं मूलं ध्यात्वा तन्महसा सर्वं जगदरुणं विभावयेत् ।

(इति मूलध्यानम्।

तदेव तेजोदेवीं शरीररूपेण परिणतं विभाव्य योनिमुद्रया नत्वा मूलं श्री महात्रिपुरसुन्दर्याः कर्पूर शकलैर्दन्त शुद्धिं कल्पयामि नमः मूलं श्री महात्रिपुर-स्वर्णशलाकया जिह्वोल्लेखनं परिकल्पयामि । मूलं श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या : कर्पूरशकलैर्दन्त शुद्धिं कल्पयामि नमः मूलं श्री महात्रिपुरसुम्दर्याः स्वर्ण शलाकयाजिह्वोल्लेखनं परिकल्पयामि। मूलं श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सुगन्धकोष्ठजलंगंडूषैर्मुखप्रक्षालनं कल्पयामि । मूलं श्री महात्रिपुरसुन्दर्याः सूक्ष्मवस्त्रेण मुखप्रोंछनं कल्पयामि मूलं श्री महात्रिपुरसुन्दर्याः अष्टगन्धैस्तिलकं कल्पयामि ।

ततः पञ्चोपचारैर्देवीं सम्पूज्य समष्टि मन्त्रेण पुष्पांजलिं दत्वा स्तुवीत।

त्रैलोक्य चैतन्यमयि त्रिशक्ते श्रीविश्वमातर्भवदाज्ञयैव ।

प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ।।१।।

संसारयात्रामनुवर्तमानं त्वदाज्ञया श्रीत्रिपुरे परेशि ।

स्पर्धातिरस्कार कलिप्रमादभयानि मामाश्रितवन्तु मातः ।।२।।

जानामिधर्मं न च मे प्रवृत्ति जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः

त्वयाहृदंतस्थितया महेशि यथानियुक्तोस्मि तथा करोमि ।।३।।

(इति देवीं ध्यानम्)।

पूर्वेद्युः सूर्योदयमारभ्याद्यसूर्योदयंयावदाचरितमुछ्वासनिःश्वासात्मकं षट्शताधिकमेकविशतिः सहस्त्रसंख्याकमजपा जपंमूलाधार स्वाधिष्ठान मणिपूरानाहत विशुद्धाज्ञा सहस्त्रारचक्र स्थितेभ्यो गणेशब्रह्म विष्ण्वीशजीवगुरु ब्रह्मभ्यो यथाभागं समर्पयामि नमः।

अद्य पुनः श्वासोछ्वासरूपेणाजपाजपमहं करिष्ये हंस' इति पंचविंशतिवारं जत्वा —

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।

सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ।। (मयिस्थिरे) ।

इति गुरूदक्षिणहस्ते जपं समर्पयेत् । इत्यजपाविधिः

समुद्रमेखले देवी पर्वत स्तनमण्डले ।

विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ।।

इति भुवं प्रार्थ्य

वहन्नाडी पादपुरःसरं उत्थायावश्यकं निर्वर्त्य मूत्र शौचादिकं कृत्वा —

क्लीं कामदेवाय सर्वजन प्रियाय नमः।

इति दंतधावनम् ह्लीमिति जिह्वोल्लेखनम् ।

श्रीं ॐ श्रीं ह्लीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद श्रीं ह्लीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।।

श्रीं ह्लीं क्लीं श्रीं सहकल ह्लीं श्रीं — इति ।

चतुर्भिर्मन्त्रैर्मुखप्रक्षालनं च कृत्वा मूलेनाचमेत । इति मुखप्रक्षालनम् ।

ततो नद्यादौ गृहे वा ब्राह्मश्वे वैदिकस्नानं निर्वर्त्त्य पूर्वोच्चरितैवं गु० तिथौ श्री–महात्रिपुरसुन्दर्यार्थं तांत्रिक स्नानमहं करिष्ये ।

इति संकल्पः

आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि ।

एहि गंगे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ।।

क्रोमित्यंकुशमुद्रया सूर्यमंडलात्तीर्थान्याकृष्य जले संयोज्य त्रिकोणं विभाव्य

तदंतर्गतविंदौ देवीं विचिंत्य पंचोपचारैरभ्यर्च्य तच्चरणकमलालक्तकारूणं जलं ध्यायेत् । मूलेन निमज्योन्मज्य अंजलिना जलमादाय मूलेन त्रिरभिमंत्र्य शिरसि निक्षिप्य योनिमुद्रया मूलेनात्मानं तिरभिषिंच्याचम्योत्थाय गुरुपादुका स्तोत्रं पठेत्।

वागुरामूलवलये सूत्रद्याकवलीकृताः ।
एवं कुलागमे ज्ञानं पादुकायां प्रतिष्ठितम् ।।१।।

कोटि कोटि महादानात् कोटि कोटि महाव्रतात् ।
कोटिकोटि महायज्ञात् पराश्रीपादुकास्मृतिः ।।२।।

कोटिमन्त्रजपात् कोटिपुण्य तीर्थावगाहनात् ।
कोटिदेवार्चनाद्देवि पराश्रीपादुकास्मृतिः ।।३।।

महारोगे महोत्पाते महादुखे महाभये ।
महापदि महापापे स्मृता रक्षति पादुका ।।४।।

तेनाधीतं स्मृतं ज्ञातं दत्तमिष्टं च पूजितम् ।
जिह्वाग्रे वर्तते यस्य पराश्रीपादुकास्मृतिः ।।५।।

सकृत् श्रीपादुकां देवि यावज्जपति भक्तितः ।
स सर्वपाप रहितः प्राप्नोति परमां गतिम् ।।६।।

शुचिर्वाप्यशुचिर्वापि भक्त्या स्मरति पादुकाम् ।
अनायासेन धर्मार्थकाममोक्षाल्लभेत् सः ।।७।।

श्रीनाथचरणाम्भोजं यस्यां दिशि विराजते ।
तस्यै दिशि नमस्कुर्याद्भक्त्या प्रतिदिनं प्रिये ।।८।।

न पादुकापरो मन्त्रो न देवः श्रीगुरोः परः ।

न हि शैवात् परोमार्गो न पुण्यं कुलपूजनात् ।।९।।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोस्मृतिः ।

शास्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोःकृपा ।।१०।।

गुरुमूलाः क्रिया सर्वाः लोकेऽस्मिन् कुलनायिके ।

तस्मात् सेव्यो गुरुर्नित्यं सिध्यर्थं भक्तिसंयुक्तैः ।।११।।

तावदार्तिभयंदुखंमोह शोकश्रमादयः ।

यावन्नायाति सदनं श्रीगुरुर्भक्तवत्सलः ।।१२।।

तावद् भ्रमति संसारे सर्वदुखमलीमसे ।

यावन्नायाति सदनं श्रीगुरूर्भक्तवत्सलः ।।१३।।

ततो धौते वाससी परिधायाचमेत् ।

इति स्नानम् ।

।। इति प्रथमो पटलः ।।

अथ द्वितीयोपटल:

बज्र पंजरात्मकभस्मधारणम्

ततः अग्निहोत्रजं भस्मपात्रांत्तरे वामहस्ते वा गृहीत्वा सद्योजातादिभिः पंचैर्मन्त्रैर्मानस्तोकेतित्र्यम्बकेति अग्निरित्यादि सप्तभिश्चाभिमन्त्र्य श्रीविद्यया शिरसि,

ऐं वद वद वाग्वादिनी ऐ क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभयं कुरु-कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु-कुरु सौः ह्सौः – इति दिपिन्या मुखे ।

ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी देवदेविसंहारकारके जातवेदसि ज्वलंति ज्वल ज्वल प्रज्वल२ह्रां ह्रीं ह्रूं । ज्वालामालिनि हुं फट् स्वाहा।

ज्वालामालिन्या वक्षांसि।

ॐ जल वासिन्यै नमः - नाभौ।

ॐ ह्रीं वह्नि वासिन्यै नमः वह्नि मण्डले ।

ॐ सहस्रार हुं फट् स्वाहा-इति सुदर्शनेनोर्वोः ।

ॐ श्लीं पशु हुं फट् - इति पाशुपतस्त्रेण जंघयोः ।

ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर-घोर तनु रूप चट-चट प्रचट-प्रचट कह कह वम वम वंध वंध घातय घातयहुं फट् स्वाहा-अंघोर विद्यया शिरसि ।

ॐ ह्रीं वैष्णव्यै नमः - इदि ।

ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर पृष्ठे ।

ॐ सहस्रार हुं फट् स्वाहा- जान्वादिनाभ्यंतम् ।

ॐ ह्रीं स्फुर० पादादिजान्वतं ।

ह सौः अंआं ५२ ह्सौः - सर्वाङ्गे ।

ॐ ह्रीं क्लीं क्ष्रीं श्रीं ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलंतं सर्वतो मुखं ।

नृसिहं भीषणं भद्रं मृत्युं मृत्युं नमाम्यहं ।

श्रीं क्ष्रौं क्लीं ह्रीं ॐ - दक्ष वाहौ

ॐ क्ष्रौं नमो भगवते नरसिंहाय ज्वालामालिने दीप्तदंष्ट्राय अग्निनेत्राय सर्वरक्षोघ्नाय सर्वभूतविनाशाय सर्वज्वर विनाशाय दह-दह पच-पच रक्ष-रक्ष हुं फट् स्वाहा ।

ज्वालानरसिंहेन वामवाहौ ।

उत्तिष्ठ उग्र वीर पिंगल लोहिताक्ष देहि मे दापय स्वाहा ।

वडवानल भैरवः उत्तिष्ठ पुरुषि किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय शमय स्वाहा नव दुर्गा ।

मृत्योस्तुल्यं त्रिलोकी ग्रसितुमति रसान्निसृताः किं नु जिह्वा किं वा कृष्णांघ्रि पद्मद्युतिभिररूणिता विष्णुपद्मा पदव्यः प्राता स्मरारेः स्वयमुतनुतिभिस्तिस्त्र इत्युह्यमाना देवैर्देव्यास्त्रिशूलक्षत महिष जुषोरक्त धारा जयंति इति मृत्युतुल्य दुर्गा -एतैस्त्रिर्मन्त्रैः सर्वाङ्गे।

एता एव महाविद्या विभूतेरभिधारणे ।
कथिताः परमेशानि सर्वापत्पातका; ।।
वज्रपंजर नामेदं यः कूर्यात् भस्मधारणं ।
स सर्वभयनिर्मुक्तः साक्षाच्छिवमयो भवेत् ।।

ब्रह्मणे नमः - ललाटे ।
हव्यवाहनाय नमः - हृदये ।
स्कन्दाय नमः - नाभौ ।
विष्णवे नमः - गले ।
त्र्यम्बकाय नमः - भ्रूमध्ये ।
रुद्राय नमः - दक्षबाहुमूले ।

आदित्याय नमः - मध्ये ।

शचीपतये नमः - मणिबन्धे ।

वामदेवाय नमः - वाम बाहुमूले ।

प्रभंजनाय नमः - मध्ये ।

बसुभ्यो नमः:- मणिबन्धे ।

हराय नमः - पृष्ठे ।

शम्भवे नमः - ककुदि ।

शिवशंकराय नमः -पाश्वर्योः।

परमात्मने नमः - शिरसि ।

इति मंत्रैस्त्रिपुंड्रान्धृत्वा -

एतानि तानि शिव मन्त्रा पवित्रितानि ।

भस्मानि कामदहनांग विभूषणानि ।।

त्रैंपुंड्रितानि रचितानि ललाटपट्टे ।

लुंपंतु दैव लिखितानि दुराक्षराणि ।।

इति वज्रपंजरात्मक भस्मधारण विधिः ।

।। इति द्वितीयः पटलः ।।

अथ तृतीयः पटलः

तांत्रिक सन्ध्या

ततो वैदिकीं संध्यां निर्वर्त्य तांत्रिकीं कुर्यात् । सा यथा गोकर्णाकृति हस्तेन माष-मात्रं जलं गृहीत्वा ब्राह्मतीर्थेन पिबेत् ।

क५ आत्म तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

ह ६ विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

स ४ शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

[illegible] ।

क ५ आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

मूलं सर्वतत्त्वं तत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

इति त्रिः इति नवधाचम्य ह्रीं अंगान्यद्भिः ह्रीं संस्पृश्य मूलेन शिखां वध्वा मूलमन्त्रमुच्चरन्। एकं वारं पूरकेण वायुमापूर्य कुम्भकेन चतुर्वारं मूलं जप्त्वा मूलमन्त्रमुच्चरन् रेचकेन द्विवारं विरेच्य पुनः पिंगलादीडांतं कृत्वा पुनरिडादि पिंगलांतं कुर्यात् एवं त्रिप्राणानायम्य ।

ॐ अस्य श्री महात्रिपुरसुन्दरी मन्त्रराज महामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तये ऋषये नम; इति दक्षिणांगुष्ठ तर्जनीमध्यमाभिः शिरसि पंक्ति छन्दसे नमो मुखे अंगुष्ठकनिष्ठिकानामाभिः श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमो हृदि करतलेन क ५ वीजाय गुह्ये सर्वांगुल्यग्रैः स-४ शक्तयै नमः युगपद्दक्षहस्तेन वाम पादे वामहस्तेन

दक्ष पादे जान्वाद्यंगुल्यग्रांतं ह ६ कीलकाय सर्वाङ्गे व्यापकमुद्रया व्यापकं कूर्यात् मम चतुर्विध पुरुषार्थ सिध्यर्थे जपे विनियोगः।

वालया षडंग द्वयं कृत्वा कलशस्थ जलं धेनुमुद्रया बमिति बीजेनामृतीकृत्य गरुडमुद्रया क्षिप ॐ स्वाहा - इति निर्विषयीकृत्य तज्जलं मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य तजज्लं पात्रांतरेण गृहीत्वा एकपंचाशत् मातृकारभिसविंदुकंनमों ताभिः कुशैर्दक्षहस्त तत्त्व मुद्रया शिरः प्रोंक्ष्य मूलविद्यया त्रिः संप्रोक्ष्य यथोक्तरूपां देवीं सूर्यमण्डले ध्यात्वा, दक्षिणहस्ते जलं गृहीत्वा लं वं रं यं हं इति पांचभौतिकमन्त्रैः सप्तवारं मूलेन त्रिवारं चाभिमन्त्र्य अंगुलीसंधितस्थो तद्बिन्दुभिः वामहस्त तत्वमुद्रया मूलेन शिरस्त्रिः प्रोंक्ष्य दक्ष हस्तस्थं जलं वामहस्ते गृहीत्वा तेजोरूपं तज्जलं हृदया अंतराकृष्टं विभाव्य तद्देहांतस्थित सकलकल्मष क्षालनेन कृष्णतामापत्रं दक्षहस्ते विरेच्य वामतो भावितं ज्वलद्वज्र शिलायां आस्फाल्य,

ॐ श्लीं पशु हुं फट् - इति पाशुपतास्त्रेण पोथयेत् ।

करौ प्रक्षाल्य पुनः कलशस्थं जलं मूलेन दक्षहस्ते गृहीत्वा वहन्नासा द्वारेमांतराकृष्य ब्रह्मरन्ध्रांतं नीत्वा परामृते नैकीभूतां विभाव्य राजदंत विवरान्नेत्रद्वारेण वामहस्ते विरेच्य दक्षहस्त तत्त्व मुद्रयांकुशैवा ॐ अमृतमालिनी स्वाहा इति ।

त्रिवारं शिरः प्रोंक्ष्य पूर्ववन्नवधाचमेत् ।

ततः सूर्य मण्डले यथोक्तरूयां देवीं ध्यात्वा उत्थाय -

क्र ५ वागीश्वरी विद्महे कामेश्वरी धीमहि स ४ तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्। श्री मद्कामेश्वरी पादुकायै एषोर्ध्यः स्वाहा । इति त्रिवारमर्घ्यं सूर्यमण्डलस्थायै देव्यै दत्वा -

ह्रां ह्रीं सः श्रीसूर्य एष तेऽर्घ्यः स्वाहा ।

इति त्रिवारमर्ध्य सूर्याय दद्यात् ।

ततः उपविश्य मूलं श्री महात्रिपुरसुन्दरी सांगां सपरिवारां सायुधां सशक्तिकां सवाहनां श्री महात्रिपुरसुन्दरी पादुकां तर्पयामि नमः ।

ह्रां ह्रीं सः श्रीसूर्यांतर्पयामिनमः इति त्रिःसूर्यं तर्पयेत् ।

ततः प्रथम कूटं तडित् कोटि समप्रभं मूलाधारादि ब्रह्मरन्ध्रांतं संचित्य तत्तेजः सुषुम्णा वर्त्मना बह्मरन्ध्रातं वहन्नासाध्वना आकाशस्थ वह्निमण्डले

समावाह्य तत्तेजः समुद्भूतां वाग्भव कूट देवतां ध्यायेत् ।

पीतांपीताम्वरां पीतस्त्रग्विभूषानुलेनाम् ।

तडित् कोटि समाभासां बालामक्षस्त्रगुज्वलाम् ।

पुस्तकाद्य करांभोजां वह्निपीठ निषेदुषीम् ।

वाग्भवीं वाग्भवोद्भूतां त्रीक्षणां सस्मितां स्मरेत् ।।

इत्याकाशस्थ वह्निमण्डले ध्यात्वा –

क ५ त्रिपुरावागीश्वरी पादुका० इति त्रीवारं पूज्य –

ऐं त्रिपुरे देवि विद्महे वागीश्वरी धीमहि तन्नो शक्तिः प्रचोदयात् ।

क त्रिपुरा वागीश्वरी पादुकायै एषोर्घ्यः स्वाहा ।

इति त्रिरर्घ्यं दत्वा –

क ५ त्रिपुरावागीश्वरी पादुकां तर्पयामि नमः ।

इति त्रिस्तर्पयेत् ।

तां देवीं तेनैवाध्वनापुनरात्मनि विसृजेत् । पुनः प्राणायामं ऋष्यादि न्यासांश्च कृत्वा मातृकान्यासं कुर्यात् ।

श्री महात्रिपुरसुन्दर्याज्ञया प्रवर्तमाने "ख" युगे "ड" परिवर्त्ते "श" वर्षे 'अ' दिवसे 'ख' वर्षस्य स यथा –

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं दिननित्याविद्याहंसः ।

अं नमः - ललाटे अनामामध्यमाभ्याम् ।

ॐ ऐं ३ मू० दि० हंसः आं नमः मुखवृत्ते तर्जनीमध्यमाभ्याम् ।

४ मू० दि० इ नमः दक्ष नेत्रे तर्जन्यनामिकाभ्याम्।

४ मू० दि० ईं - वामनेत्रे तर्जन्यनामिकाभ्याम् ।

४ मू० उं नमः दक्षकर्णे अंगुष्ठेन ।

४ मू० दि० ऊं० नमः - वामकर्णे अंगुष्ठेन ।

४ मू० दि० नमः वामनासपुटेकनिष्टांगुष्ठाभ्याम् ।

४ मू० दि० ऋं नमः दक्षनासापुटे कनिष्ठांगुष्ठाभ्याम् ।

४ मू० दि० ॠं नमः - वामनासापुटेकनिष्ठांगुष्ठाभ्याम् ।

४ मू० दि० लृं दक्षगंडे मध्यमा० ।

४ मू० दि० ॡं नमः - गंडे मध्यमाया

४ मू० दि० एं नमः - उध्र्वोष्ठे अनामया ।

४ मू० दि० ऐं नमः अधरोष्ठे अना०

४ मू० दि० ओं नमः उर्ध्वदन्त पंक्तौ अनाम०

४ मू० दि० औं नमः- अधोदन्तपंक्तौ अना०

४ मू० दि० अं नमः- मूर्ध्नि मध्यमाया० ।

४ मू० दि० अः नमः- मुखे अंगुष्ठेन ।

४ मू० दि० कं नमः- दक्षदोर्मूले दक्षहस्तकनिष्ठानामामध्यमाभिः ।

४ मू० दि० खं नमः- दक्ष कूपरि।

४ मू० गं नमः- दक्षिणामणिबन्धे ।

४ मू० घं नमः- दक्षकरांगुलिमूले ।

४ मू० ङं नमः - दक्षकरांगुल्यग्रे ।

४ चं० नमः- वामदोर्मूले ।

४ छं० नमः – वामकूर्परे

४ जं० नमः- वाममणिवन्धे।

४ झं० नमः- वामकरांगुलिमूले।

४ ञं० नमः- वामकरांगुल्यग्रे।

४ मू० टं -- दक्षवंक्षणे ।

४ ठं नमः - दक्षाष्ठीवत्संधौ ।

४ डं नमः - दक्षपादीय गुल्फ संधौ ।

४ ढं नमः - दक्षपादांगुलिमूले ।

४ णं नमः - दक्षपादांगुल्यग्रे ।

४ तं नमः - वामवंक्षणे ।

४ थं नमः - वामाष्ठीवत्संधौ ।

४ दं नमः - वामपादीय गुल्फसंधौ ।

४ धं नमः - वामपादांगुलिमूले ।

४ नं नमः - पादांगुल्यग्रे ।

४ मू० पं० नमः - दक्ष पार्श्वे।

४ फं नमः - वाम पार्श्वे।

४ मू० दि० २ बं नमः - पृष्ठे।

एतावत्पर्यन्तं कनिष्ठिकानामामध्यमाभिः।

४ भं नमः नाभौ - तर्जनीरहित पंचागुल्यग्रै :।

४ मं नमः - जठरे पंचांगुलिभिः

४ यं नमः - हृदिकरतलेन ।

४ रं नमः - दक्षकक्षायां ।

कनिष्ठानामामध्यमारूपांगुलित्रयेण।

४ लं नमः - अपरगले कनि०।

४ वं नमः - वामकक्षायां क०

४ शं - हृदादिकक्षकराग्रांतं कर०।

४ षं नमः - हृदादिवाम०

४ सं नमः - हृदादि दक्षपादाग्रांतकर०।

४ हं नमः - हृदादिवाम पाद०

४ कं नमः - हृदादि गुह्यांतकर०

४ दि० क्षं नमः हृदादि मूर्धांतकरतलेन।

इति मातृका न्यासः।

क वागीश्वरी विद्महे ६ कामेश्वरी धीमहि स ४ तन्नः शक्ति : प्रचोदयात्।

इति मूल गायत्रीं १० जपेत् ।

ऐं त्रिपुरे देवि विद्महे वागीश्वरी धीमहि तत्र: शक्तिः प्रचोदयात ।

इति कूट गायत्री १० जपेत ।

।। इति तृतीयो पटलः।।

अथ चतुर्थो पटलः

ततो नाथपारायणं कुर्यात् । तत्रादौ ध्यानम् –

प्रातर्मूलाधारगते कमले वह्निमण्डले ।

वाग्वीजरूपां नित्यांतां विद्युत् पटलभासुरां ।।१।।

पुष्पवाणेक्षुकोदण्डपाशांकुशलसत्कराम्

स्वेच्छा गृहीत वपुषां युगनित्याक्षरात्मिकाम् ।।२।।

घटिकावरणोपेतां परितः प्रांजलिनथ ।

ज्ञानमुद्राभयकरां वाग्भवोपास्ति तत्परां ।।३।।

नवनाथान्स्मरेत् मूलपंकजे योनिमण्डले ।

इत्येवं प्रकारेण मूलाधारे समंतत उपविष्टां नवनाथांश्च ध्यात्वा - ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं दिनं नित्याविद्यां हंस अं आं ८/२ प्रकाशानन्दनाथ रूपिणी श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि ।

४ मू० दि० अजपा ळं ळृं ८/२ विमर्शानन्द ना०।

४ मू० दि० कं ५/२ आनन्दानन्द ना०।

४ मू० दि० चं ५/२ ज्ञानानन्द०।

४ मू० दि० टं ५/२ सत्यानन्द०।

४ मू० दि० तं ५/२ पूर्णानन्द०।

४ मू० दि०पं फं ५/२ स्वभावानन्द०।

४ मू० दि०पं ५/२ प्रतिभानन्द०

४॰मू० दि०षं ५/२ सुभगानन्दनाथ० ।

इति नाथपरायण ततश्चक्रेश्वरी पारायणं कुर्यात् ।

४ मू० दि० अं आं ८ अं आं सौः त्रिपुरा चक्रेश्वरी रुपिणी श्री म०।

४ मू० दि० लृं ८ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशी चक्रेश्वरी०।

मू० कं० ५ ह्रीं क्लीं सौ त्रिपुरसुन्दरी चक्रे०।

४ मू०चं ५ हैं ह क्लीं ह सौं त्रिपुरवासिनी चक्रे०।

४ मू० टं ५ ह्रीं श्रीं ह सै हं स्क्लीं ह सौः त्रिपुरा श्रीचक्रे०।

४ मू० चं ५ हैं ह क्लीं ह सौः त्रिपुरवासिनी चक्रे० ।

४ मू० टं ५ ह्रीं श्रीं ह सै हं स्क्लीं ह सौः त्रिपुरा श्रीचक्रे०

४ तं ५ ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनी चक्रेश्वरी० ।

४ मू०पं ५ ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरसिद्धचक्रेश्वरी।

४ मू० यं ५ ह सै हसकलरीं ह सौः त्रिपुराम्बा चक्रे ०।

४ मू० षं० ५ ह्रीं श्रीं महात्रिपुर सुन्दरी श्रीः इति चक्रेश्वरी पारायणम् ।

ततः काल नित्यां १०८ मू० १०८ प्रथम कूटं १०८ जप्त्वाप्राणायाम ऋष्यादि न्यासश्च कृत्वा हृदयादि न्यासं कुर्यात् ।

हृदि अंगुष्ठतर्जनी मध्यमाभिः ।

शिरसि अंगुष्ठं तर्जनीभ्याम् ।

शिखायै अंगुष्ठेन ।

कवचे अंगुष्ठाभ्यां वाहुमूलादि नाभ्यंतम् ।

नेत्रत्रयेतर्जनीमध्यमानामिकाभिः। अस्त्रे दक्षहस्ततर्जनीमध्यमाभ्यां उपर्युपरि तालत्रयं वामकरे ताडनेन, वध्वादक्षांगुष्ठ मध्यमाभ्यां चोटिकाभिर्दशदिशोबध्वा पुनः/पुर्ववत्तालत्रयं कुर्यात् ।

इति बाला युक्तैस्तन्मंत्रैर्न्यसेत् ।

ततो ध्यानम्।

अरुणां करुणातंरगिताक्षीं धृतपाशांकुश पुष्पवाणचापाम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावेद्भवानींम् ।।

इति ध्यात्वा।

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्धं कल्पयामि नमः।
हं आकाशात्मिकायै पुष्पं कल्पयामि ।
यं वाय्यात्मिकायै धूपं कल्प० ।
रं वह्न्यात्मिकायै दीपं कल्प०।
वं अमृतात्मिकायै नैवेद्यं क०।
सं सोमात्मिकायै ताम्बूलं क०।

इति सर्वांगुलिभिः संपूज्य गुह्येति मन्त्रेण वामाधः करे जपं निवेदयेत् । देवीं गुरूं च प्रणमेत्।

इति प्रातः सन्ध्या ।

ततो नाडी पारायणं कुर्यात् अकारादिक्षकरांताः पंचाशद्वर्णाविसर्ग स्वर दश दश भूत्वा पंच वर्णाः अ ए च त य नामानो भवन्ति।

तैः षष्ठि जपः कार्यं० प्रकारस्तु ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मू० दि० न० अं ४ मू० दि० आं ए वं क्षां–

तान्पञ्चाशद्वर्णानावर्त्य पुनरादि म वर्गमावर्तयेत् एवं षष्ठिरावृत्तयः मूल विद्याया भवन्ति।

द्वितीये दिने ४ मू०दि० एवं क्षां तान् चतुरो वर्गानावर्त्य पुनराद्यमावर्तयेत् एवं षष्ठिरावृत्तयः।

तृतीये दिने ४ मू० दि० चं ए वं क्षां तां त्रीन्वर्गानावर्त्य पुनराद्यं त्रीना वर्तयेत् एवं षष्ठिः।

चतुर्थे दिने ४ मू० दि० तं एवं क्षां तौ द्वौ वर्गानावर्त्य पुनराद्यां चतुरो वर्गानावर्तयेत् एवं षष्ठिः।

पंचम दिने ४ मू० दि० यं एवं क्षांत वर्गं जपित्वा पुनरकाराद्यान् क्षां

तान्पंचवर्गानावर्तयेत् षष्ठि:।

पष्ठे दिने पुनरकारादित: आरभ्य उक्त यावत् रीत्या घटिका-पारायणं जपमनवरतं कूर्यात्। इति नाडी परायणम् ।

अथ तर्पणं वैदिकीं तांत्रिकीं सन्ध्यां कृत्वा तर्पणमाचरेत प्राणायाममृष्यादि न्यासांश्च कृत्वा जले तीर्थ मावाह्य वं धेनु मुद्रयामृतीकृत्य मूलेनाष्टवारमभिमंत्र्य श्रीचक्रं विभाव्य तत्र पीठपूजा पुर:सरं देवीमावाह्य षोडशोपचारै: संपूज्य अंगावरण देवता: संपूज्य पुनर्मूलेन देवीं संपूज्य -

ॐ ऐं श्रीं मू० श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्री पा०

इत्युक्त द्रव्येणाष्टोतरशतवारं तदर्धं तदर्धमष्टाविंशतिवार यथाशक्ति वा तीर्थजले परदेवता मुखकमले परामृतबुध्यासंतर्प्य आवरणदेवता यथाक्रमं पूजोक्त मंत्रैस्तर्पयाम्यहं तैरेकैकांजलिना तर्पयेत् । अशक्तौ वटुकादि चतुष्कं षडंग युवति गुरु पंक्तित्रय सप्तदश नित्याभि: सहितां चतुरस वृत्तोपेत त्रिकोणमध्यस्था सायुधां त्रिकोणावरण शक्तियुतां मूलं देवीं तर्पया०।

अथवा संस्कृतजलेन देवीं ध्यात्वा देवीमेव मूलान्ते सांगां सपरिवारां सायुधां सावरणां सशक्तिकां श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीं तर्पयामि नम: ।

इति मन्त्रेण तर्पयेत् । इति तर्पण विधि:।

अथ मध्याह्न संध्या

तत्र विशेष:। आचम्य प्राणानायम्य ऋष्यादिन्यास करन्यास हृदयादिन्यास धेनुमुद्रामृतीकरण गरूणमुद्रया निर्विषीकरणाभिर्मन्त्रेण मार्जनाचमनांतं कृत्वा-

क ५ वागीश्वरी विद्महे ह ६ कामेश्वरी धीमहि स ४ तन्न: शक्ति: प्रचोदयात्। श्री० महा० श्री पादुकायै एषोर्घ्य: स्वाहा । अर्घ्यं त्रयं दत्वा-

ह्रां ह्रीं स: श्री० स्वाहा ।

इति सूर्याय त्रि: श्री म० पादुकां तर्पयामि त्रि:।

ह्रां० सूर्यं तर्पयामि त्रि:।

तत: अनाहत चक्रे मूलविद्याया: कामराजकूटं रक्त वर्णं ध्यायेत्

ततः सुषुम्णा मार्गेण वहन्नासा पुटाध्वनानिः सायं सूर्यमण्डले समावाह्य तदुद्भूतां कामेश्वरी ध्यायेत् ।

रक्तां सुरक्तां वरभूषणाढ़याम् ।
पाशांकुशां भीतिवरां दधानाम् ।।
शुचि स्मितामुद्गत यौवनाढ्याम् ।
कामेश्वरीं संस्मरत त्रिनेत्राम् ।।

ध्यात्वा कामराजमुच्चार्य त्रिपुरा कामेश्वरी पा० इति त्रिः पूज्य ततः—

क्लीं त्रिपुरे देवि विद्महे कामेश्वरी धीमहि। तन्नः क्लिन्ने प्रचोदयात्।

ह ६ त्रिपुर कामेश्वरी पादुकायै एषोर्घ्य स्वाहा। इति त्रीन् दत्वा—

ह ६ त्रिपुर कामेश्वरी पादु० तर्पयामि० त्रिः। तां कामेश्वरीं तेनैवाध्वना पुनरात्मनि विसृजेत् । ततः प्राणानायम्य ऋष्यादिन्यासं कृत्वा पुर्वोक्त मातृका न्यासं कुर्यात् । ततः

क ५ वागी० ह ६ कामेश्वरी ० स ४ तन्न शक्ति० ।

इति मूल गायत्री १० जपेत् ।

क्लीं त्रिपुरे० कामे० तन्नः शक्तिः।

कूट गायत्री १० जपेत् ।

ततस्तत्व पारायणं कुर्यात्

ध्यानं मध्याह्ने—

हृदयाम्भोजकर्णिकेसूर्यमण्डले कामराजात्मिकां ।
देवीमलक्तक रसारूणां प्रसूनवाण पौंड्रेक्षु।
चाप पाशांकुशान्वितां परितश्चात्ममुख्याभिः
षट् त्रिंशस्तत्व शक्तिभिः रक्तमाल्यांवराले
पशूषाभिः परिवारिता युग नित्याक्षरमयी
घटिकावरणां स्मरेत् ३ पुष्पवाणेक्षुकोदण्डधराः
शोणवपुर्धराः हृत्पंकजे च ताः कामराजोपास्ति पारायणः।

४ मू० दि० कं अं शिव तत्त्वस्वरूपिणी श्री महा श्री पा०।

४ मू० दि० कं शक्ति तत्त्व०।

४ मू० दि० खं सदाशिव तत्त्व०।

४ मू० दि० गं ईश्वर तत्त्व०।

४ मू० दि० घं शुद्ध विद्या तत्त्व०।

४ मू० ङं माया तत्त्व।

४ मू० चं कला०।

४ मू० छं विद्या०।

४ मू० जं रागतत्त्व०।

४ मू० झं काल तत्त्व०।

४ मू० ञं नियति तत्त्व०।

४ मू० टं पुरुष तत्त्व० ।

४ मू० ठं प्रकृति०।

४ मू० डं अहँकार०।

४ मू० ढं बुद्धि त०।

४ मू० णं मनस्तत्त्व०।

४ मू० तं श्रोत०।

४ थं त्वक्०।

४ दं नेत्र०

४ धं जिह्वा०।

४ नं घ्राण०।

४ पं वाक् तत्त्व० ।

४ फं पाणि त०।

४ बं पादत०।

४ मू० भं पायुरूपत०

४ मं उपस्थरु० ।

४ यं शब्द तत्त्वरुप० ।

४ रं स्पर्श तृत्व रू० ।

४ लं रूप तत्त्व रूप० ।

४ वं रस तत्त्व रूप० ।

४ शं गंध तत्त्व रूप० ।

४ मू० षं आकाश तत्वरूप० ।

४ सं वायु तत्त्व रूप० ।

४ हं तेजस्वतत्वरूप

४ मू० दि० २ कं जलतत्त्वरू० ।

४ मू० दि२० ५ क्षं पृथ्वीतत्त्व रूपिणी–

श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

इति तत्वपारायणम् ।

ततः काल नित्यां १०८ मूलं च १०८ जप्त्वा हृदय कमले कामराजकूटं वालार्ककोटिप्रभं हृदयादिब्रह्मरन्ध्रांतं व्याप्तिरश्मि कदम्बकं ध्यायन्कामराजकूटं १०८ जप्त्वा प्राणायामादि जप निवेदनांतं कुर्यात् ।

इति मध्याह्न संध्या ।

अथ सायं संध्या

आचम्य प्राणानायम्य ऋष्यादि करन्यास हृदयादि न्यासामृतीकरण निर्विषीकरणाभिर्मार्जनांतं कृत्वा० आचम्य–

क ५ वागीश्वरी विद्महे ह ६ कामेश्वरी धीमहि स ४ तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

श्री महात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकायै एषोऽर्घ्यः स्वाहा ।

ह्रां ह्रीं सः श्रीसूर्य एष तेऽर्घ्यः स्वाहा ।

मू०. श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां तर्पयामि ।

ह्रां ह्रीं सः श्री सूर्यं तर्प० ।·

ततः आज्ञाचक्रे हं क्षं बीजे चन्द्रमण्डले मूलविद्यास्तृतीयं कूटं शुद्धस्फटिकसंकाशं ब्रह्मरन्ध्रस्थ पुर्णेन्दु मण्डलपर्यन्तं ध्यात्वा वहन्नासापुटां ध्वना तत्तेजो निःसार्य आकाशस्थ सोममण्डले समावाह्य तदुद्भूताममृतेश्वरी बृद्धां ध्यातेत्।

शुक्लां शुक्लांवरां शुक्लस्त्रगाभरणभूषिताम् ।
जटाजूटधरां नेत्रत्रयोद्भासि मुखाम्बुजाम् ।।
ईषत्स्फुरितद्रंष्ट्रा च भैरवी रूपमास्थिताम् ।
जरापलित संकीर्णा लंब-मान पयोधराम् ।।
पाशांकुशौ पुस्तकं च फटिकाक्ष स्त्रजंकरैः।
दधानां शक्तिंविम्बोत्थां पुर्णेंदोर्मण्डले स्थिताम् ।।
ध्यायेदाद्यां परां शक्तिः शक्तिमद्भिः निषेविताम् ।
भोगमोक्षप्रदां शांताममृताममृतेश्वरीम् ।

इति ध्यात्वा –

स ४ त्रिपुरा माहेश्वरी पादुकां पूज०

इति त्रिः संपूज्य–

सौः त्रिपुरे देवि विद्महे शक्तिश्वरी धीमहि तन्नोऽमृता प्रचोदयात् ।

४ स ४ त्रिपुरामृतेश्वरी पादुकायै एषोऽर्घ्यः स्वाहा ।

इति चन्द्रमंडलाभिमुख्येन त्रीनर्घ्यान्दत्वा –

स ४ त्रिपुरामृतेश्वरी पादुकां तर्पयामि नमः ।

इति त्रिस्तर्पयेत् ।

ततः प्राणायामादि हृदयादिन्यासांतं कृत्त्वा पुर्वोक्तं मातृकान्यासं कुर्यात् । तत;

क५ वागीश्वरी० ह ६ कामेश्वरी० स४ तन्नः शक्तिः-मूल गायत्री । १० जपेत् । कूट गायत्री -

सौः त्रिपुरा देवी विद्महे शक्तीश्वरी धीमहि तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ।

ततः नित्यापारायणं कुर्यात्

तत्रादौ ध्यानम्

सायमाज्ञा सरोजस्थे चन्द्रे चन्द्रसमद्युतिम् ।
शक्तिबीजात्मिकां वाणचाप पाशांकुशान्विताम् ।
युगनित्याक्षरां देवीं घटिकावरणां पराम् ।
चिन्तयित्वा भगवतीं नित्याभिः परिवारिताम् ।
पुस्तकं चाक्षसूत्रं च दधानां स्मरेत्वक्राम् ।
नित्या षोडश चाज्ञायां सायंकाले तु स्मरेत् ।।

इति ध्यात्वा–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूलं दिननित्या विद्या हं·सः २ अं ऐं स ४ नित्य क्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरी नित्यरूपिणी श्री महात्रिपुर सुन्दरी श्री पादुकां पूजयामि नमः।

४ मू० दि० भग सुभगे भगिनी भगोदरि भगमाले भगवहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनी सर्वभगवशंकरि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रे तेषु रे ते भग क्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चेक्षुशः क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरी ऐंब्लूं कलं जें ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं ब्लैं ह्रीं आं भगमालिनी नित्या श्री रू० ।

४ मू० दि०. २ इं ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा ।

इं नित्य क्लिन्नानित्या रू० ।

४ मू० दि० ईं ॐ क्रों भ्रों क्रों झौं छौं जौं स्वाहा ईं भेरुडां नित्या रूपि ० ।

४ मू० दि० ऊँ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः ।

ॐ वह्निवासिनि नित्या रू०।

४ मू० दि० २ ह्रीं क्लींन्ने ऐं क्रों नित्य मद द्रवे ह्रीं ॐ बज्रेश्वरी नित्या रू० ।

४ मू० दि० २ ॠं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ॠं शिवदूती नित्या रू०।

४ मू० दि० २ ॠं ऊँ हीं हुं खे च छे क्षः स्त्री हुं क्षे ह्रीं फट् ॠं त्वरिता नित्या रू०।

४ मू० दि० २ लं ऐं क्लीं सौः लं कुलसुन्दरी नित्या रूपि०।

४ मू० दि० २ ल्लृं ह स क ल र डैं ह स क ल र डीं ह स क ल र डौः ल्लं नित्यानित्या रू० ।

४ मू० दि० २ ऐं ह्रीं फ्रें स्त्रू क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्य मद द्रवे ह्रुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताका नित्या रू०।

४ मू० दि० २ ऐं भ म र य औं ॐ ऐं विजयानित्या रू ।

४ मू० दि०२ ॐ स्वौ ॐ सर्वमंगलानित्या रू०।

४ मू० दि०२ औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी देवदेविसर्वभूत संहारकारिके जातवेदसि ज्वलंति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं रं ज्वालामालिनी हुं फट् स्वाहा ॐ ज्वालामालिनी नित्या रु० ।

४ मू० दि० २ अं च्क्रों अं चित्रानित्या रू० चित्रानित्या रू ।

४ मू० दि० २ अः मूलं अः महानित्या रू०।

४ ह स् क् ल् ह स क् ह ल् सकल ह्रीं श्रीमहासप्तदशी कलातीता नित्या ४ ह्रीं ०

इति नित्यापारायणम् ।

ततः कालनित्या १०८ मू० जपित्वा भ्रू मध्यादि ब्रह्मरंध्रांत तृतीय कूटशरच्चन्द्र कोटिनीभंध्यायन् शक्तिकूटं १०८ जप्त्वा सूर्यमण्डलाच्चन्द्रमंडला च्चामृतेश्वरी हृदि भ्रूमध्ये च विसृजेत् ।

ततः प्राणायामादि जपसमर्पणांतं कुर्यात् ।

इति सायं सन्ध्या

अथार्ध रात्रि सन्ध्याः

आचम्य प्राणायामाद्याचमनपर्यन्तं कृत्वा सहस्रारपद्मे तुरीये कूटं मूलं विद्या त्रयोदशाक्षरीरूपं पद्मरागसमप्रभं ध्यात्वा वहन्नासापुटेन तारकामंडलाद्बहिः परमाकाशे समावाह्य तदुद्भूताम् भगवतीं तेजोरुपां ध्यायेत् तुरीय कूटं ह् स् क् ल् ह् क् ह् ल् स क ल ह्रीं रूपंमुच्चायं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकायै अर्घ्यं कल्पयामि नमः ।

इति त्रिरर्घ्यं दत्त्वा० पुनस्तुरीयकूटमुच्चार्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां तर्पयामि नमः इति त्रिः संतर्प्य –

ततः प्राणायामादि मातृकां न्यासांतं कृत्वां क ५॰ वागी० पूर्वोक्तां मूलगायत्रीं १० जप्त्वा कालनित्यां १०८ मूलं १०८ तुरीयं बीजं च १०८ जप्त्वा प्राणायामादिपूर्वकं जपं सम्र्प्य देवीं स्तुत्वा परमाकाशात्सहस्रदलकर्णिकायां उद्वास्य कामकला रूपमात्मानं ध्यायेत् ।

इत्यर्धरात्रि सन्ध्या।

ततः -

नमतगुरु गणेशवासवाग्नीन्यितृतपतिनैऋतिराशिगन्धवाहः।

धनदशिवरवीन्दुभौमसौम्यान्सुरगुरुभार्गवमंदराहु केतून् ।।

एतच्छलोकोक्तान्नत्वा पूर्णोदकं कलशमादाय स्तोत्रं जपन गृहमागत्य तत्र स्थित्वा यत्पापमर्जितं पूर्वं अद्य वान्यदिनेऽपि वा प्रायश्चितैर्न लुप्येत तद्विपापं स्मरेत ।

देवी त्वत्पद गांच्चिक्तं पापाक्रांतमभून्मम ।

तन्निसारय चित्तान्मे पापं फट् - फट् च ते नमः ।।

सूर्य सोमो यम कालो महाभूतानि पञ्च च।

एते शुभाशुभस्येह कर्मणो नव साक्षिणः।।

इत्युक्त्वा गृहं प्रविश्य पादौ प्रक्षाल्याचम्य यागमंडपद्वारसमीपं गत्वा–

द्वारोर्ध्व गणेशाय नमः।

द्वारशाखयोः धात्रे नमः ।

विधात्रे नमः।

गंगायै यमुनायै नमः।

शंखनिधये नमः।

पद्मनिधये नमः।

द्वारमध्ये द्वां द्वारश्रियै०।

देहल्यै० वां वास्तुपुरुषाय० ।

दीं दीपनाथाय ० ।

इत्यक्षतैः संपूज्य आसनस्थान भूम्यै०

इति भुवं पुजयित्वा सौः आधारशक्ति कमलास०।

इत्यासनं प्रस्तार्य ।

पृथ्वी त्वया धृता लोकाः देवी त्वं विष्णुनाधृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

इत्युपविश्य –

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशं ।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभेत् ।।
अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिसंस्थितः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।

इति वाम पार्ष्णिना भूमौ त्रिराघातेन भौमान्विघ्नान्निरस्य दक्षिणहस्तस्य तर्जनीमध्यमाभयांवामहस्ततले ताडनेन शब्द त्रयमुपर्युपरि कृत्वा आन्तरिक्षान् विघ्नानुत्सार्य स्वस्य सच्चिदानन्द ब्रह्मात्मतां ध्यायन् क्रूर दृष्ट्यावलोकनेन दिव्यांश्च विघ्नान्परिहृत्य परितोग्निप्रकारं तत्परितो वज्रशृंखलां च विचिंत्य –

वामे गुं गुरुभ्यो ०।

दक्षिण गं गणपतये० ।

पृष्ठे क्षं क्षेत्रपालाय० ।

अग्रे श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै ०।

इति नत्वा ब्रह्मरन्ध्रगते चन्द्रमण्डलेऽमृतवर्षिणीं भवानीं भूमिशुध्यर्थं भावयेदमृतेश्वरीम् ततस्तन्मौलिनिष्यन्द सुधाकल्लोल वृष्टिभिः चिन्तयेन्मग्नमात्मानं भूमिशुद्धिरियं भवेत्

इति भूत शुद्धि।

।। इति चतुर्थो पटलः।।

अथ पंचमो पटलः

भूत शुद्धिः

पादादि जानुपर्यन्तं भूतत्वं चतुरस्रकम् ।
लं बीजं लाकिनीं शक्तिसहितं ब्रह्मदैवतम् ।।१।।
निवृत्ति कलयोपेतं पीतं वज्रैश्च लांछितम् ।
जान्वादि नाभिपर्यन्तं पूतत्वं विष्णुदैवतम् ।।२।।
अर्धचन्द्राकृति श्वेतं श्रृंगयोः पद्मलांछितम् ।
प्रतिष्ठाकलयोपेतं बं बीजं काकिनीयुतम् ।।३।।
नाभ्यादि हृदयांत तु वह्नि तत्त्वं त्रिकोणकम् ।
रं बीजं राकिनी युक्त मारक्तं रुद्रदैवतम् ।।४।।
विद्यया कलयोपेतं लांछिकं स्वस्तिकैस्त्रिभिः।
हृदयादि भ्रुवोर्मध्यपर्यन्तं वायुमण्डलम् ।।५।।
षट्विन्दु युक् वृत्तयुक् षट्कोणमीश्वरदैवतम् ।
कृष्णं शांतिकलोपेतं यं बीजं याकिनीयुतम् ।।६।।
भ्रूमध्याद्ब्रह्मरन्ध्रांतं रवं सदाशिव दैवतम् ।
शांत्यातीत कलोपेतं हं वीजं हाकिनीयुतम् ।।७।।
वृत्ताकारं धूम्रवर्णं चिन्तये ध्वजलांछितम् ।

पंचभूतमये देहे धर्मकन्दसमुद्भवम् ।।८।।

ऐश्वर्याष्टदलं ज्ञानं वैराग्य कर्णिकम् ।

अधोमुखं तु हृत्पद्मं प्रणवेनोर्ध्वमुन्नयेत् ।।९।।

हृत्पद्म कर्णिकामध्ये जीवात्मानं विचिंतयेत् ।

अनाद्यविद्या संछन्नं प्रतीपकलिकोपमम् ।।१०।।

आराग्रमात्रं परचिद्रूपं दर्पणसन्निभम् ।

मूलाधारे कुण्डलिनीं विसतन्तुं तनीयसीम् ।।११।।

अध्यष्टवलयाकारां तडित् कोटिसमप्रभाम् ।

सर्वदेवमयी ध्यायेत् प्रसुप्त भुजगीमिव ।।१२।।

गुदतोध्यंगुलादूर्ध्वं मूलाधारे चतुर्दले ।

वादि सांताचतुर्वर्णान्विरदाद्याश्च देवताः ।।१३।।

मध्ये तु साकिनीं पंचवक्त्रामस्थ्यभिमानिनीम् ।

तदूर्ध्व अंशेसु संस्थाने स्वाधिष्ठानाब्ज षट्दले ।।१४।।

वादिलान्तास्तु षट्वर्णान्वंधिन्याद्याश्च देवताः ।

मध्येतु तु काकिनीं पीतां मेदो देवीं चतुर्मुखीम् ।।१५।।

नाभि स्थाने दशदले मणिपूराभिधांबुजे ।

दशवर्णान् डादि फान्तान्डामर्याद्यधि देवताः ।।१६।।

मध्येतु लाकिनीं रक्तां त्रिमुखी मांस देवताम् ।

द्वादशच्छदने पद्मे हृदयेऽनाहताभिधे ।।१७।।

कादि ठांतान् द्वादशवर्णान्कात्र्याधिदेवताः ।

मध्ये तु राकिनीं श्यामां द्विमुखीं रक्त देवताम् ।।१८।।

कंठे विशुद्धि चक्राख्ये षोडशछदनेऽम्बुजे ।

षोडशार्णा नकाराद्यानमृताद्यश्च देवताः ।।१९।।

मज्जाभिमानिनीं शुक्लां हाकिनीं परिचिन्तयेत् ।

हं क्षं वर्णद्वयं हंसवतीं चैव क्षमावतीम् ।।२०।।

सहस्त्रपद्मे कमले सर्व वर्ण परिवृत्ते याकिनीम् ।
सर्व वर्णाढ्यां ध्यायेत् शुक्राभिमानिनीम् ।।२२।।
तदंग कर्णिका चन्द्रब्रह्मज्योतिर्विचिन्तयेत ।
आधार कर्णिकामध्यादा सहस्त्रार कर्णिकम् ।।२३।।
तिस्रो नाड्यइडांतांस्तु वामे दक्षे तु पिंगलाम् ।
सुषुम्णां मध्यतो ध्यात्वा हुं मन्त्रेण भुजंगनीम् ।।२४।।
स्वेच्छा दंडाहतां कृत्वोत्थाप्य सुषुम्णावर्त्मना।
मूलाधारादि चक्रस्थ वर्ण वर्णाधिदेवताः।।२५।।
ग्रसन्ती हृदयं नीत्वा जीवात्मानं निजं तथा ।
हंस मंत्रेण कवलीकृतं संचित्य मंत्रवित् ।।२६।।
सुषुम्णा वर्त्मनैवोर्ध्व विशुध्यादिषु संस्थितान् ।
वर्णान्वर्णाधिदेवांश्च ग्रासयन् ब्रह्मरन्ध्रकम् ।।२७।।
नीत्वा तत्कर्णिकामध्यवर्तिनि ब्रह्मधामिनि ।
ग्रस्तानक्षर देवौद्यान्प्रणवेन प्रवेशयेत् ।।२८।।
जीवं च सोहमित्युक्ता योज्यकुण्डलिनीमधः।
परावर्त्य पुनर्मूले पूर्व स्थापयेत्ततः।।।२९।।
षडुद्धात प्रकारेण पृथ्वीं पंचगुणां जले ।
विलापयेत् जलं वह्नौ पंचोद्धातैश्चतुर्गुणम् ।।३०
अग्निं च त्रिगुणं वायौ चतुघातैर्विलापयेत् ।
द्विगुणं वायुमाकाशे त्रिरुद्धातैर्विलापयेत् ।।३१।।
व्योमत्वेकगुणं द्वाभ्यामुद्धाताभ्यामहं कृतैः ।
अहंकारं महत्तत्त्वे प्रकृतौ तद्विलापयेत् ।।३२।।
प्रकृतिं कुण्डलिन्यां च विलाप्य मनुवित्तमः ।
उत्थाप्य भुजगीं भालं मध्य विन्दुस्थलं नयेत् ।।३३।।
तां विन्दुं शक्तौ तां नादशक्तिं मध्ये विलापयेत् ।

नादशक्तिं पराशक्तौ तां तु ब्रहणि योजयेत् ।।३४।।
एवं कुणप मात्रेष्वशेषिते स्वकलेवरे।
वामकुक्षि स्थितं पापं पुरुषं कज्जल प्रभम्।।३५।।
ब्रह्महत्या शिरस्कं च स्वर्णस्तेज भुजद्वयम् ।
सुरापान हृदायुक्तं गुरुतल्प कुटिद्वयम् ।।३६।।
तत्संसर्गी पद द्वंद्वमंग प्रत्यंग पातकम् ।
उपपातक रोमाणं रक्त श्मश्रु विलोचनम् ।।३७।।
खड्ग खेटा वृत्तकारं क्रूररूपं विचिन्तयेत् ।
ततः स्ववाम नासाधो यं बीजं कृष्णवर्णकम् ।।३८।।
विचित्य तेन सहितं वायुमापूरयेत् वुधः ।
तदनाहतपद्मस्थे षट्कोणे वायुमण्डले ।।३९।।
संस्थाप्य षोडशावृत्या बीजमुच्चार्य कुंभके ।
तदुत्थितेन महता वायुना पापपुरुषम् ।।४०।।
कुणपं स्वं च संशोष्य वायु दक्षेण रेचयेत् ।
रं बीजं दक्षनासाधाश्चिंतयेदतिशोणितम् ।।४१।।
आपूर्य तेन सहितं वायुं दक्षिणनासया ।
मणिपुरस्थितांभोजकर्णिकामध्यवर्तिनी ।।४२।।
अग्निबीजं प्रतिष्ठाप्य त्रिकोणे वह्निमण्डले ।
कुम्भकेन चतुःषष्ठी वारमावर्तयन्बुधः।।४३।।
तदुत्थितेन महता वह्निना पाप पुरुषम् ।
कुणपेन सहाश्लोष्य त्रिविधं भस्म तद्भवम् ।।४४।।
श्वेतं सात्विक मारक्तं राजसं तामसं पुनः।
कृष्णं पृथक् पृथक् कृत्वा स्वाधिष्ठानाभिधांबुजे ।।४५।।
सात्विकं भस्म संस्थाप्य ततो राजस तामसे ।
भस्मनि पापपुरुष भस्मना सह मिश्रिते ।।४६।।

वामया नासया मंत्री वहिर्दूरे विरेचयेत् ।
वं बीजं वामनासाधश्चितयित्वाति पांडुरम् ।।४७।।
वायुना सह तं नीत्वा ब्रह्मरन्ध्रे द्युमण्डले ।
द्वात्रिंशद्वारमावर्त्य तदुत्थामृतधारया ।।४८।।
सात्विकं भस्म विक्लेद्य दक्ष वायुं विरेचयेत् ।
पुनस्तत्रैव लं वीजं पीतवर्णं विचिंतयेत् ।।४९।।
वायुना सह तं नीत्वा मूलाधाराब्जकर्णिकाम् ।
भूमण्डले चतुष्कोणे प्रतिष्ठाप्याथ कुम्भके ।।५०।।
पृथ्वी बीजमावर्त्य तदुद्भूतेन तेजसा ।
अमृता प्लावितं भस्म शरीररचनक्षमम् ।।५१।।
घनीकृतानिलं वामनासयारेचनच्छनैः ।
हं बीजं तत्र संचित्य नीत्वा तद्वायुना सह।।५२।।
मूलाधारस्थिते विंदौ संस्थाप्यावर्त्य कुंभके ।
सर्वावयव सम्पूर्णं देहं जातं विभाव्यतु ।।५३।।
दक्षनासिकया वायुं मंत्रवेत्ता विरेचयेत् ।
पर ब्रह्मणि या पूर्वं पराशक्ति विलापिता ।।५४।।
विसृक्षारूपिणी चित्या सा तस्मात्प्रकटीकृता ।
नादशक्तिस्ततो जाता विंदुशक्तिस्तदुद्भवा ।।५५।।
ततः कुण्डलिनी तस्याः प्रकृतिः प्रकृतेर्महान् ।
महत्तत्वादहंकारस्तस्मादाकाश संभवः ।।५६।।
ततो वायुस्ततो वह्निस्तत् आपस्ततो मही ।
तत्त्वान्येवं समुत्पाद्य स्वस्व स्थानेषु विन्यसेत् ।।५७।।
पूर्ववत्स्थापयेत् मूलाधार कुंडलिनीमपि ।
नादशक्तिं विन्दुशक्तिं पराशक्तिं च सर्वतः ।।५८।।
स्वदेहे व्यापकत्वेन सम्यक् संस्थापयेद्बुधः ।

ततः पुनः कुण्डलिनीमुत्थाप्य ब्रह्मरन्ध्रकम् ।।५९।।
नीत्वा तया सोहमिति मन्त्रेण परमात्मनः ।
जीवात्मानं विनिःसार्य वर्णान्वर्णाधिदेवता; ।।६०।।
सुषुम्णावर्त्मनैवाधः स्थापयन्हृदयं नयेत् ।
सोहं मन्त्रेण हृदये जीव विन्यस्य तत्परम् ।।६१।।
मणिपूरादिच क्रेषु वर्णां तद्देवता अपि ।
यथा स्थानमवस्थाप्य यथापूर्वं भुजंगनीम् ।।६२।।
प्रतिष्ठाप्य निजं देहं निरस्ताखिलकल्मषम् ।
शुद्धं सत्त्वमयं ध्यायेद्देवताराधनक्षमम् ।।६३।।

इति भूत शुद्धिः।

श्री त्रिपुरसुन्दर्यर्पिताः।

।। इति पंचमो पटलः ।।

अथ षष्ठः पटलः

प्राण प्रतिष्ठा

अस्य श्रीप्राण प्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्म विष्णु शिवेभ्यो ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ऋक यजुः साम छन्देभ्यो नमो मुखे । सृष्टिस्थित्यन्तकारिण्यै प्राणशक्त्यै परायै देवतायै नमः हृदि । आं बीजाय नमः गुह्ये । ह्रीं शक्तयै नमः पादयोः क्रों कीलकाय नमः नाभौ । सर्वाङ्गे व्यापकं वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः नमः करसंपुटे ।

ॐ आं ह्रीं क्रों ह्रा अं कं खं गं घं ङं आकाशवायुतेजोजलपृथिव्यात्मे आं अं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

४ ह्रीं ईं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ आं ह्रीं क्रो हूं उं टं ५ श्रोतंत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ॐ मध्यमाभ्यां नमः।

४ ह्रौं ॐ पं फं० ५ वचनादानविसरणविसर्गानन्दात्मने औं कनिष्ठिकाभ्यां।

ॐ ४ हः अं यं, १० मनोबुध्यहंकार चित्तचैतन्यात्मने अः करतल करपृष्ठाभ्या० एवं हृदयादि न्यासः।

संरक्ताम्बोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरुढ़ा, कराब्जैः पाशंकोदंड मिक्षुद्भव गुणमणिमप्यंकुशं पंचवाणान् । विभ्राणासृक्कपाल त्रिनयनलसितापीनवक्षो रुहाढ्या देवी, वालार्क वर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः।।

इति ध्यानम् ।

पंचोपचारैर्मनसाभ्यर्च । हृदि शिरसि वा हस्तं निधाय त्रि; सकृत्वा मंत्रं पठेत्।

आं ह्रीं क्रों अं यं रं लं वं शं षं सं सोहं ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ हंसः मम प्राणाः इह प्राणाः।

आं ह्रीं क्रों २० मम जीव इह स्थितः

आं ह्रीं क्रों २० मम सर्वाङ्गाणि ।

ॐ २० मम वाङमनसस्चक्षु श्रोत्र घ्राण - प्राणाः इह आगत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ॐ क्षं हं सं हं सः ह्रीं ॐ । इति प्राणप्रतिष्ठा । स्वरै पूरकः कादिवर्गपंचकेन कुम्भकः। यादि दशवर्णैरेंचकः इति प्राणानायम्य -

अस्य श्री मातृकान्यासमन्त्रयस्य ब्रह्मऋषयो नमः शिरसि । गायत्री छन्दसे नमो मुखे। मातृका सरस्वत्यै नमः हृदि । विन्दुभ्यः हलभ्यो बीजेभ्यो नमः- गुह्ये । स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः- पादयोः। कीलकेभ्यो नमः - नाभौ। सर्वाङ्गे व्यापकम्।

अंतर्मातृकान्यासे वहिर्मातृकान्यासेषु च विनियोगाय नमः करसंपुटे न्यस्य-।

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठा०।

ॐ इं चं छं जं झं ईं तर्जनीभ्याम् ०।

ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्याम् ०

ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्याम् ०।

ॐ ऊं पं फं वं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्याम् ०।

ॐ अं यं रं लं वं शं षं हं क्षं लं अः करतल करपृष्ठाभ्याम् नमः एवं हृदयादि०।

अथ ध्यानम्

पंचाशद्वर्णभेदैर्विहितवदन दोः पादहृत्कुक्षिवक्षोदेशाम् ।

भास्कत्वकपर्दां कलितशशि कला मिन्दुकुंदावदावाम् ।।

अक्षस्त्रककुम्भचिंतालिखितवरकरांत्रीक्षणां पद्मसंस्थाम् ।

अथाकल्पामतुष्ठ स्तन जघन भरां भारतीं तां नमामि ।।

दक्षोर्ध्वकरमारभ्य दक्षाधः कर पर्यन्तं आयुध ध्यानम् ।

ततः विशुद्धिपद्ममूर्ध्व मुखं प्रागादि प्राग दक्षिण्येन ।

ॐ अं नमः हंसः सोहमिति मंत्रानकारादि विसर्गान्त स्वरसहितान्षोडशन्यसेत्।

एवमनाहते कं नमः हंसः सोहमित्यादीन् ठकारांत वर्ण सहितान्द्वादश

मणिपुरे डं नमः हंसः सोहं इत्यादि फकारान्त वर्ण सहितान् दश ।

स्वाधिष्ठाने प्रथमदलत्रये बं नमः।

भं नमः मं नमः ।

इति न्यस्य ततः षट्स्वपि दलेऽष्टेषु हंसः सोहमिति मंत्रशेषं न्यस्य चरणदलत्रये यं नमः रं नमः लं नमः इति न्यसेत् ।

मूलाधारे वं नमः शं नमः षं नमः सं नमः इति न्यस्य हंसः सोहमिति शेषं ततो न्यसेत् ।

आज्ञाचक्रे हं नमः हंसः सोहं क्षं. नमः हंसः सोहमिति न्यस्य इत्यंतर्मातृका न्यासः। ततः क्षं नमः ।

लं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं वं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ऐं एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊ ऊं उं ईं इं आं अं नमः ललाटे।

।। इति षष्ठः पटलः।।

अथ सप्तमो पटल :

श्री गणेशादि षोढ़ान्यासः

ततः क्षं नमः इत्यादि मस्तक पर्यन्तम् ।
लं हृदयादि नाभिपर्यन्तं इत्यादि विपरीतं ।
अं नमः इत्यंतं संध्या न्यासोक्तस्थलेषु न्यसेत् ।

इति संहार न्यासः ।

एवमकारादिक्षकारान्सविसर्गान्तत्तत्स्थानेषु न्यसेत् ।

इति सृष्टि न्यासः ।

पुनरपि डकारादि ठकरांतान् तत्तत्स्थानेषु विन्दुविसर्गोभय युक्तान् न्यसेत् ।

इति स्थिति न्यासः ।

अथ लघुषोडान्यासः

श्री गुरूपादुकां ध्यात्वा० ।

श्री गुरू परमानन्द वंदे स्वानंदविग्रहं ।
यस्य सन्निधिमात्रेण चिदानन्दायते तनुः ।।

इति नत्वान्यासमारभेत् ।

श्री गणेशादि षोढान्यासः

अस्य श्रीगणेशादि षोडान्यास दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः शिरसि पंक्तिछन्दसे नमो मुखे। श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। मम समस्तपापक्षयार्थे श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी मंत्रानुष्ठानांगत्वेन लघु षोढ़ान्यासे विनियोगाय नमः ।

ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं आं ऐं अंगुष्ठाभ्याम् ।

ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं इं चं ५ईं क्लीं तर्जनीभ्याम् ।

४ उं टं ५ ऊं सौः मध्यमाभ्याम् ।

४ एं तं ५ ऐं सौः अनामिका० ।

४ ओं पं ५. औं क्लीं कनिष्ठिका० ।

४ अं यं १० अः ऐं करतलकरपृष्ठाभ्याम् नमः ।

एरं हृदयादि ध्यानम् ।

उद्यत् भानुसहस्राभांपीनोन्नतपयोधराम् ।

रक्तमाल्यांबरालेपां रक्तभूषणभूषिताम् ।।

पाशांकुश धनुर्बाण भास्वत्पाणिचतुष्ट्याम् ।

रक्तनेत्रत्रयां स्वर्णमुकुटोद्भासिकांचिकाम् ।।

गणेशग्रहनक्षत्र योगिनीराशिरूपिणीम् ।

देवीं पीठमयीं ध्यायेन्मातृकां सुन्दरीपराम् ।।

इति ध्यात्वा न्यसेत् ।

तरुणारुण संकाशान् गजवक्त्रांस्त्रिलोचनाम् ।

पाशांकुशवराभीतिकरान् शक्तिसमन्वितान् ।।

इति ध्यात्वा ।

अं श्रीयुक्ताय विघ्नेशाय नमः । शिरसि ।।

[ऐं ह्रीं श्रीं[१] अं श्रीयुक्ताय विघ्नेशाय नमः । शिरसि ।।]

इति ललाटस्थानानि मुद्राश्च बहिर्मातृकावत् ।

१.नित्योत्सवमें ऐं ह्री श्रीं अं श्रीयुक्तायविघ्नेशाय नमः । ऐसा दिया गया है।

आं ह्रीं युक्ताय विघ्नराजाय नमः । मुखवृत्ते ।।

अं इं तुष्टियुक्ताय विनायकाय० । दक्षनेत्रे ।।

ईं शान्तियुक्ताय शिवोत्तमाय० । वामनेत्रे ।।

उं पुष्टियुक्ताय विघ्नकर्त्रै० । वामकर्णे ।।

ऊं सरस्वतीयुक्ताय विघ्नहृते न० । दक्षकर्णे ।।

ऋं रतियुक्ताय विघ्नराजाय० । दक्षनासापुटे ।।

ॠं मेधायुक्ताय गणनायकाय० । वामनासापुटे ।।

ऌं कांतियुक्ताय एकदन्ताय० । दक्षगण्डे ।।

ॡं कामिनीयुक्ताय द्विदन्ताय० । वामगण्डे ।।

एं मोहिनीयुक्ताय गजवक्त्राय० । उध्र्वोष्ठे ।।

ऐं जटयुक्ताय निरंजनाय० । अधरोष्ठे ।।

ओं तीव्रायुक्ताय कन्दर्पभृते न० । उध्र्वदन्त पंक्तौ ।।

औ ज्वालिनीयुक्ताय दीर्घमुखाय० । अधोदन्तपंक्तौ ।

अं नंदायुक्ताय शंकुकर्णाय० । जिह्वाग्रे ।।

अः सुरसायुक्ताय कण्ठे वृषध्वजाय० ।

कं कामरूपिणी युक्ताय गणनाथाय नमः० । दक्षावाहुमूले ।।

खं शुकीयक्ताय गजेन्द्राय० । — दक्षकूपरि ।।

गं जयिनीयुक्ताय शूर्पकर्णाय०। — दक्षमणिवन्धे ।।

घं सत्यायुक्तााय त्रिलोचनाय० । — दक्षकराङ्गुलिमूले ।।

ङं विघ्नेशी युक्ताय लंबोदराय० । — दक्षकराङ्गुल्यग्रे ।।

चं सुरूपायुक्ताय महानादाय० । — वामबाहुमूले ।।

छं कामदायुक्ताय चतुर्मूर्ते० । — वामकूपरि ।।

जं मदविह्वलायुक्ताय सदाशिवाय० । — वाममणिवन्धे ।।

झं विकटायुक्तायामोदाय० । — वामकराङ्गुलिमूले ।।

ञं पूर्णायुक्ताय दुर्मुखाय० । — वामकराङ्गुल्यग्रे ।।

टं भूतिदायुक्ताय सुमुखाय० । — दक्षोरुमूले ।।

ठं भूमियुक्ता प्रमोदनाय० । — दक्षजानुनि ।।

डं सत्यायुक्ताय एकपादाय० । — दक्षगुल्फे ।।

ढं रमायुक्ताय द्विजिह्वाय० । — दक्षपादाङ्गुलिमूले ।।

णं मानुषीयुक्ताय शूराय० । दक्षपादाङ्गुल्यग्रे ।।

तं मकरध्वजयुक्ताय वीराय० । वामोरुमूले ।।

थं वीरिणी युक्ताय षणमुखाय० । वामजानुनि ।।

दं भृकुटि युक्ताय वरदाय० । वामगुल्फे ।।

धं लज्जायुक्ताय वामदेवाय० । वामपादाङ्गुलिमूले ।।

नं दीर्घघोणायुक्ताय वक्रतुण्डाय० । वामपादाङ्गुल्यग्रे ।।

पं धनुर्धरायुक्ताय द्विरंडकाय[१] नमः । दक्ष पाश्र्वे ।।

फं यामिनीयुक्ताय सेनान्यै नमः । वामपाश्र्वे ।।

बं रात्रियुक्ताय ग्रामण्ये नमः । पृष्ठे ।।

भं चन्द्रिका युक्ताय मत्ताय नमः० । नाभौ ।।

मं शशिप्रभायुक्तायं विमत्ताय० । जठरे ।।

यं लोलायुक्ताय मत्तवाहनाय० । — हृदये ।।

रं चपलायुक्ताय जटिने नमः । — दक्षस्कन्धे ।।

लं ऋद्धियुक्ताय मुंडिने नमः । — गलपृष्ठ-ककुदि ।।

वं दुर्भगायुक्ताय खड्गिने नमः । वाम स्कन्धे ।।

शं सुभगायुक्ताय वरेण्याय० । हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम् ।।

षं शिवायुक्ताय वृषकेतनाय० । हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम् ।।

सं दुर्गायुक्ताय भक्ष्यप्रियाय० । हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम् ।।

---

१. (नित्याषोऽशिकार्णवे - द्वितुण्डकाय नमः - इति पाठः)

हं कालीयुक्ताय गणेशाय० । हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम् ।।
लं कालकुब्जिकायुक्तायमेघनादाय० । हृदयादिगुह्यान्तम् ।।
क्षं विघ्नहारिणीयुक्ताय गणेश्वराय० । हृदयादिमूर्धान्तम् ।।

इति गणेश न्यास: ।

अथ ग्रह न्यास:

रक्तं श्वेतं तथारक्तं श्यामं पीतं च पांडुरम् ।
कृष्णं धूमं धूम-धूम्रं भावयेत् - रविपूर्वकात् ।।
कामरूपधरानदेवान् दिव्यांबरविभूषितान् ।
वामोरून्यस्त हस्तांश्च दक्षहस्तवरप्रदान् ।।

इति ध्यात्वा

अं १६ सूर्याय नमः — हृदयाधः ।
पं ४ चन्द्राय नमः —भ्रूमध्ये ।
कं ५ भौमाय० — लोचनयोः ।
चं ५ बुधाय० — हृदयोपरि चोरकूपाधः ।
टं ५ वृहस्पतये नमः — कंठदेहे ।
त ५ शुक्राय० — हृदये ।
पं ५ शनैश्चराय नमः — नाभौ ।
शं ४ राहवे नमः — मुखे ।
लं क्षं केतवे० — गुदे

इति ग्रह न्यास: ।

'ज्वलत्कालानल प्रख्यावरदाभयपाणयः ।
नति पाण्योऽश्विनी पूर्वाः सर्वाभरणभूषिताः ।।'

इति ध्यात्वा

अं आ अश्विन्यै नमः — ललाटे ।

इं भरण्यै नमः — दक्ष नेत्रे ।

ईं उं ऊं कृत्तिकायै नमः — वामनेत्रे ।

ऋं ॠं लृं लॄ रोहिण्यै० — दक्षकर्णे ।

एं मृगशीर्षे० — वाम कर्णे ।

ऐं आर्द्रायै० — दक्षनासापुटे ।

ओं औं पुनर्वसवे नमः — वामनासापुटे ।

कं पुष्याय नमः— कंठे ।

खं गं आश्लेषायै न० — दक्ष स्कन्धे ।

घं ङं मघायै० — वाम स्कन्धे ।

चं पूर्वाफाल्गुन्यै न०— पृष्ठे ।

छं जं उत्तराफाल्गुन्यै न०— दक्ष कूर्परे ।

झं ञं हस्तायै० — वाम कूर्परे ।

टं ठं चित्रायै० — दक्षमणिबन्धे ।

डं स्वात्यै०— वाम मणिबन्धे ।

ढं णं विशाखायै० — दक्षहस्ते ।

तं थं दं अनुराधायै० — वामहस्ते ।

धं ज्येष्ठायै नमः — नाभौ ।

नं पं फं मूलाय० — कटिबन्धे ।

बं पूर्वाषाढ़ायै०— दक्षोरौ ।

भं उत्तराषाढ़ायै०— दक्षोरौ ।

मं श्रवणाय०— दक्ष जानुनि ।

यं रं धनिष्ठायै० — वामजानु० ।

लं शततारकायै० — दक्षजंघायां ।

वं शं पूर्वाभाद्रापदायै० — वाम जंघायां ।

षं सं हं उत्तर भाद्रपदायै — दक्ष पादे ।

लं क्षं अं अः रेवत्यै नमः — वामपादे ।

इति नक्षत्र न्यासः ।

अथ योगिनी न्यासः

ग्रीवा स्थाने विशुद्धौ नृपदलकमले श्वेतरक्तां त्रिनेत्राम् ।

हस्तैः खट्वांग खड्गौ त्रिशिखमपि महाचर्मसंधारयंतीम् ।

त्वक्स्थां वंदेऽमृताद्यैः परिवृतवपुषं डाकिनीं वीरवंद्याम् ।।

त्वक्स्थां वंदेऽमृताद्यैः परिवृवपुषं डाकिनीं वीरवंद्याम् ।।

इति ध्या० । ।

डां डीं डमल वरयूं डाकिन्यै नमो —

ह्रीं श्रीं अं आं १६ मां रक्ष २ त्वगात्मने नमः ।

इति डाकिनीं षोडषाक्षरकर्णिकायां विन्यस्य तद्दलेष्वमृतादिकानंतर्मातृकावन्नयसेत्।

अं अमृतायै नमः ।

आं आकर्षिण्यै नमः ।

इं इन्द्राण्यै नमः ।

ईं ईशान्यै नमः ।

उं उमायै नमः ।

ऊं ऊर्ध्वकेशायै नमः ।

ऋं ऋद्धिदायै नमः ।

ॠं ॠंकारायै नमः ।

ऌं ऌंकारायै नमः ।

ॡं ॡंकारायै नमः ।

एं एकपादायै नमः ।

ऐं ऐश्वर्यात्मिकायै नमः ।

ऊँ ऊँकार्यै नमः ।

औं औषध्यै नमः ।

अं अंबिकायै नमः ।

अः अक्षरायै० ।

ततः—

हृत्पद्मे भानुपत्रे द्विवदनलसितां दंष्ट्रिणीं श्यामवर्णाम् ।
अक्षं शूलं कपालं डमरुमपिभुजैर्धारयंतींत्रिनेत्राम् ।।
रक्तस्थांकालरात्रिप्रभृतिपरिवृतांस्निग्धभक्तैकसक्ताम् ।
श्रीमद्वीरेन्द्रवंद्यामभितफलदां राकिनीं भावयामः ।।

इति ध्या०-

रा रीं र म ल व र यूं राकिन्यै नमो ह्रीं श्रीं कं १२ मांरक्ष २ असृगात्मने नमः ।

इत्यनाहतकर्णिकायां विन्यस्यान्तर्द्दलेषु कालरात्र्यादि०

कं कालरात्र्यै नमः ।

खं खंडिनायै नमः ।

गं गायत्र्यै नमः ।

घं घंटाकर्षिण्यै नमः ।

ङं ङार्णायै नमः ।

चं चंडायै नमः ।

छं छायायै नमः ।

जं जयायै नमः ।

झं झंकारिण्यै नमः ।

ञं ज्ञानरूपायै नमः ।

टं टंकहस्तायै नमः ।

ठं ठंकारिण्यै नमः ।

ततः-

दिक्पत्रेनाभिपद्मे त्रिवदनविलसद्दंष्ट्रिनीं रक्तवर्णाम् ।
शक्तिं दंभोलिदंडावभयमपि भुजैर्धारयन्तीं महोग्राम् ।।
डामर्याद्यैः परितां पशुजनभयदां मांसधात्वैकनिष्ठाम् ।
गौडान्नासक्त चित्तां सकलसुखकरीं लाकिनीं भावयामः ।।

इति ध्या०

लां लीं ल म र व र यूं लाकिन्यै नमो ह्रीं श्रीं उं १० मां रक्ष २ मांसात्मने नमः ।

इति मणिपूरंकर्णिकायां न्यस्य तद्दलेषु डामर्यादि० ।

डं डामर्यै नमः ।

ढं ढंकारिण्यै नमः ।

णं णांर्णायै नमः ।

तं तामस्यै नमः ।

थं स्थाण्यै नमः ।

दं दाक्षाण्यै नमः ।

धं धात्र्यै नमः ।

नं नंदायै नमः ।

पं पार्वत्यै नमः ।

फं फट्कारिण्यै नमः ।

ततः—

स्वाधिष्ठानाख्य पद्मे रसदललसिते वेदवक्त्रां त्रिनेत्राम् ।
हस्ताभ्यां धारयन्तीं त्रिशिखगुणकपालाभयान्यात्तवर्गाम् ।।
मेदोधातुप्रतिष्ठामलिपदमुदितांवंधिनीं मुख्ययुक्ताम् ।
पीतां दध्योदनेष्टामभिमत फलदां काकिनीं भावयामः ।।

इति ध्या०-

कां कीं कमल व र यूं काकिन्यै नमो ह्रीं श्रीं बं ६ मां रक्ष २ मेदात्मने नमः ।

इति स्वाधिष्ठानकर्णिकायां तद्दलेषु बंधिन्यादीन् न्यसेत् ।

बं बंधिन्यै नमः ।

भं भद्रकाल्यै नमः ।

मं महामायायै नमः ।

यं यशस्विन्यै नमः ।

रं रक्तायै नमः ।

लं लंवोष्ठ्यै नमः ।

ततः—

मूलाधारस्थ पद्मे श्रुतिदललसिते पंचवक्त्रां त्रिनेत्राम् ।
धूम्राक्षामस्थिसंस्थांसृणिमपिकमलं पुस्तकं ज्ञानमुद्राम् ।।
विभ्राणां बाहुदंडैः सुललित वरदांपूर्वशक्त्यावृत्तांताम् ।
मुद्रान्नासक्त चित्तां मधुमदमुदितां साकिनीं भावयामः ।।

इति ध्यात्वा:-

सां सीं समल व र यूं साकिन्यै नमो ह्रीं श्रीं वं ४ मां रक्ष रक्ष अस्थ्यात्मने नमः। एवं मूलाधारकर्णिकायां न्यस्य दलचतुष्टये वरदाद्यां

न्यसेत् ।

वं वरदायै नमः ।

शं श्रियायै नमः ।

षं षंडायै नमः ।

सं सरस्वत्यै नमः ।

ततः—

भ्रूमध्ये बिन्दुपद्मे दलयुगकलिते शुक्लवर्णं कराब्जै
र्विभ्राणां ज्ञानमुद्रां डमरुकमलामलाक्षमालां कपालम् ।
षड्वक्त्रां मज्जसंस्थां त्रिनयनलसितां हंसवत्यादि युक्ताम्
हरिद्रान्नैकसक्तां सकलसुखकरीं हाकिनीं भावयामः ।

इति ध्यात्वा०-

हां हीं हमल वरयूं हाकिन्यै नमो ह्रीं श्रीं हं क्षं मां रक्ष रक्ष मज्जात्मने नमः।

इत्याज्ञास्थकर्णिकायां न्यस्य दलयोर्देव्यौ न्यसेत् ।

हं हंसवत्यै नमः ।

क्षं क्षमावत्यै नमः ।

ततः—

मुंड व्योमस्थपद्मेदशशतदलके कर्णिकाचन्द्रसंस्थाम् ।
रेतो निष्ठां समस्तायुध कलितकरां सर्वतो वक्त्रपद्माम् ।।
आदिक्षांतार्ण शक्तिप्रकरपरिवृत्तां सर्ववर्णां भवानीम् ।
सर्वान्नासक्तचित्तां परशिवरसिकां याकिनीं भावयामः ।।

इति ध्यात्वा०-

यां यीं यमल वरयूं याकिन्यै नमो ह्रीं श्रीं अं आं ५० मां रक्ष रक्षशुक्रात्मने नमः ।

इति ब्रह्मरन्ध्रस्थ सहस्त्रारकर्णिकायां न्यस्य अमृतादि क्षमावत्यांता: पंचाशद्देवता न्यसेत् ।

इति योगिनी न्यास: ।

अथ राशि न्यास:

रक्तं श्वेत हरित पांडु चित्रकृष्ण पिशंगकान् ।

कपिश बभ्रु किर्मिरकृष्ण धूम्रानिभान्क्रमात् स्मरेत् ।।

इति ध्यात्वा०-

अं आं इं ईं मेषाय नमः — दक्षपादे ।

उं ऊं ऋं वृषभाय नमः — लिङ्गे ।

ॠं लं लॄं मिथुनाय नमः — दक्ष कुक्षौ ।

एं ऐं कर्काय नमः — हृदये ।

ओं औं सिंहाय नमः — दक्षबाहुमूले ।

अं अः शं षं सं हं लं कन्यायै — दक्षशिरोभागे ।

कं ५ तुलायै नमः — वामशिरोभागे ।

चं ५ वृश्चिकाय नमः — वामबाहुमूले ।

टं ५ धनुषे नमः — हृदये ।

तं ५ मकराय नमः — वाम कुक्षौ ।

पं ५ कुंभाय नमः — लिङ्गवामभागे ।

यं रं लं वं क्षिं मीनाय नमः — वामपादे ।

इति राशिन्यास:।

अथ पीठ न्यास:

सितासि[१]तारूण श्यामहरितपीतान्यक्रमात् ।

---

१. यह अंश नित्योत्सव से लिया गया है ।

पुनः क्रमेण देवेशि पञ्चाशत्पीठसञ्चयः ।।

अं कामरूपाय नमः - शिरसि ।

स्थानमुद्राश्च वहिर्मातृकावत्

आं वाराणस्यै नमः । - मुखवृत्ते ।।

इं नेपालाय नमः । - दक्षनेत्रे ।।

ईं पौंड्रवर्धनाय नमः । वामनेत्रे ।।

उं पुरस्थिराय नमः । दक्षकर्णे

ऊं कान्यकुब्जाय नमः । वामकर्णे ।।

ऋं पूर्णशैलाय नमः । दक्षनासापुटे ।।

ॠं अर्बुदाय नमः । वामनासापुटे ।।

ऌं आमातकेश्वराय नमः ।

ॡं एकाम्राय नमः । वामगण्डे ।।

एं त्रिस्त्रोतसे नमः । उध्र्वोष्ठे ।।

ऐं कामकोटये नमः । अधरोष्ठे ।।

ओं कैलासाय नमः । उर्ध्वदन्तपंक्तौ ।।

औं भृगुनगराय नमः । अधोदन्तपक्तौ ।।

अं केदाराय नमः । जिह्वाग्रे ।।

अः चन्द्रपुष्कराय नमः । कण्ठे ।।

कं श्रीपीठाय नमः । दक्षबाहुमूले ।।

खं ओंकाराय नमः । दक्षकूर्परे ।।

गं जालन्धराय नमः । दक्षमणिवन्धे ।।

घं मालवाय नमः । कराङ्गलिमूले ।।

ङं कुलान्तकाय नमः । दक्षदक्षकरांगुल्यग्रे ।।

चं देविकोटाय नमः । वामबाहुमूले ।।

छं गोकर्णाय नमः । वामकूर्पटे ।।

जं मारुतेश्वराय नमः । — वाममणिबन्धे ।।

झं अट्टहासाय नमः । — वामकराङ्गुलिमूले ।।

ञं विरजाय नमः । — वामकराङ्गुल्यग्रे ।।

टं राजगेहाय नमः । — दक्षोरुमूले ।।

ठं महापथाय नमः· । दक्षजानुनि ।

डं कोलापुराय नमः । — दक्षगुल्फे ।।

ढं एलापुराय नमः । — दक्षपादाङ्गुलिमूले ।।

णं कोलेशाय नमः । — दक्षपादाङ्गुल्यग्रे ।।

तं जयंतिकायै नमः । — वामोरुमूले ।।

थं उज्जयिन्यै नमः । — वामजानुनि ।।

दं चित्राय नमः । — वामगुल्फे ।।

धं क्षीरकाय नमः । — वामपादाङ्गुलिमूले ।।

नं हस्तिनापुराय नमः । — वामपादाङ्गुल्यग्रे ।।प

पं उड्डीशाय नमः । — दक्षपार्श्वे ।।

फं प्रयागाय नमः । — वामपार्श्वे ।।

बं षष्ठीशाय नमः·। — पृष्ठे ।।

भं मायापुर्यै नमः । — नाभौ ।।

मं जलेशाय नमः । — जठरे ।।

यं मलयाय नमः । — हृदये ।।

रं शैलाय नमः । — दक्षस्कन्धे ।।

लं मेरवे नमः ।— गलपृष्ठे ।।

वं गिरिवराय नमः । — वाम स्कन्धे ।।

शं महेन्द्राय नमः । — हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम् ।।

षं वामनाय नमः । — हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम् ।।

सं हिरण्यपुराय नमः । — हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम् ।।

हं महालक्ष्मीपुराय नमः । — हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम् ।।

कं ओंड्याणाय नमः । — हृदयादिगुह्यान्तम् ।।

क्षं छायाछत्रपीठाय नमः । — हृदयादिमूर्धान्तम् ।।

इति लघुषोढान्यासः ।

अष्टमः पटलः

अथ चक्रन्यासः

चतुस्त्र प्रथम रेखायै नमः ।

इत्यंजलिना मस्तकादि पादांतं व्यापकं विन्यस्य -

अणिमासिध्यै नमः — दक्षोरुसंधौ दक्षपाण्यंगुल्यग्रेषु ।

महिमा सिध्यै०

ईशित्वासिध्यै नमः — दक्षपादांगुल्यग्रेषु । — दक्षोरुसंधौ ।।

वशित्वा सिध्यै० — वाम पादांगुल्यग्रेषु ।

प्राक्राम्या सिध्यै नमः वामोरुसंधौ ।

भुक्ति सिध्यै० नमः । — वाम पादांगुल्यग्रेषु ।

इच्छा सिध्यै नमः — वामांस पृष्ठे ।

प्राप्ति सिध्यै० — शिखामूले ।

सर्वकामसिध्यै० — शिरः पृष्ठे ।

चतुरस्त्र मध्यम रेखायै नमः ।

इति तदंर्व्यापकं न्यस्य-

ब्राह्मयै नमः — पादांगुष्ठद्वये ।

माहेश्वर्यै ममः — दक्ष पार्श्वे ।

कौमार्यै नमः शिरसि ।

वैष्णव्यै नमः — वामपार्श्वे ।

वाराह्यै नमः — वामजानुनि ।

इंद्राण्यै नमः — दक्षजानुनि ।

क्षांदसे नमः — ।

चामुंडायै नमः — ।

महालक्ष्म्यै नमः वामांसे ।

चतुरस्त्रांत्यरेखायै नमः ।

इति तदंतर्व्यापकं विन्यस्य —

द्रां सर्वसंक्षोभिण्यै — नमः पादांगुष्ठद्वये ।

द्रीं सर्वविद्राविणी मुद्रायै नमः — दक्षपार्श्वे ।

क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रायै नमः — शिरसि ।

ब्लूं सर्ववशंकरिमुद्रायै नमः — वाम पार्श्वे ।

सः सर्वोन्मादिनी मुद्रायै — वाम जानुनि ।

क्रों सर्वमहांकुश मुद्रायै० दक्ष जानुनि ।

ह स ख फ्रें सर्व खेचरी मुद्रायै नमः — दक्षांसे ।

ह्सौं सर्वबीजमुद्रायै नमः : — वामांसे ।

ऐं सर्वयोनिमुद्रायै नमः — द्वादशांते ।

ह स्त्रैं ह स क ल रीं ह स्त्रौः सर्व त्रिखण्डामुद्रायै

नमः — पादांगुष्ठद्वये ।

ततः षोडशदलपद्माय नमः ।

इति तदंतर्व्यापकं विन्यस्य —

अं कामाकर्षिणी नित्याकलायै नमः — दक्ष कर्णपृष्ठे ।

आं बुध्याकर्षिणी नित्याकलायै नमः — दक्षांसे ।

इं अहंकाराकर्षिणी नित्याकलायै नमः — दक्षकूपरि ।

ईं शब्दाकर्षिणी नित्याकलायै नमः — दक्षकरपृष्ठे ।

उं स्पर्शाकर्षिणी नित्याकलायै० नमः — दक्षोरौ ।

ऊं रूपाकर्षिणी नित्याकलायै० नमः — दक्षजानुनि ।

ऋं रसाकर्षिणी नित्याकलायै नमः — दक्षगुल्फे ।

ॠं गंधाकर्षिणी नित्याकलायै नमः — दक्षपादतले ।

ऌं चित्ताकर्षिणी नित्याकलायै० नमः — वामपादतले ।

ॡं धैर्याकर्षिणी नित्या कलायै० नमः — वाम गुल्फे ।

एं स्मृत्याकर्षिणी नित्या कलायै० नमः — वामजानुनि

ऐं नामाकर्षिणी नित्या कलायै० नमः — वामोरौ ।

ओं बीजाकर्षिणी नित्याकलायै० नमः — वामकरपृष्ठे ।

औं आत्माकर्षिणी नित्याकलायै० नमः — वामकूपरि ।

अं अमृताकर्षिणी नित्या कलायै० नमः — वामांसे ।

अः शरीराकर्षिणी नित्या कलायै० नमः — वामश्रोत्रपृष्ठे ।

ततः अष्टदलपद्माय नमः ।

इति तदंत र्व्यापकं विन्यस्य —

कं ५ अनंगकुसुमायै नमः — दक्ष शंखे ।

चं ५ अनंग मेखलायै नमः — दक्षवाहुमूल संधौ ।

टं ५ अनंगमदनायै नमः — दक्षोरौ ।

तं ५ अनंगमदनातुरायै नमः — दक्ष गुल्फे ।

पं ५ अनंगरेखायै नमः — वाम गुल्फे ।

यं ४ अंनगवेगिन्यै नमः — वामोरौ ।

शं ४ अंगांकुशायै नमः — वामबाहुमूलसंधौ ।

कं क्षं अनंग मालिन्यै नमः — वामशंखे ।

13642

ततः चतुर्दशारचक्राय नमः ।

इति तदंतर्व्यापकं विन्यसेत् ।

टं सर्व क्षोभिंणीशक्त्यै नमः — ललाटे ।

ठं सर्वविद्राविणी शक्त्यै नमः — तद्दक्षभागे ।

डं सर्वाकर्षिणी शक्त्यै नमः — दक्षगंडे ।

ढं सर्वाह्लादिनी शक्त्यै० — दक्षांशमध्ये ।

णं सर्वसंमोहिनी शक्त्यै० दक्षपार्श्वा ।

तं सर्व स्तम्भिनि शक्त्यै० — दक्षोरौ ।

थं सर्वजंभिनि शक्त्यै० ३ — दक्षजंघायां ।

दं सर्व वशंकरिणिं शक्यै० — वामजंघायां ।

ततः,

धं सर्वरंजनि शक्त्यै० — वामोर्वतः

नं सर्वोन्मादिनि शक्त्यै० — वामपार्श्वे ।

पं सर्वार्थसाधिनी शक्त्यै० — वामांसे ।

फं सर्वसम्पत्तिरूपिणी शक्त्यै० — वामगंडे ।

बं सर्वमन्त्रमयी शक्त्यै — ललाटवामभागे।

भं सर्वद्वन्द्वक्षयंकरि शक्त्यै — शिरः पृष्ठे।

ततः वहिर्दशार चक्राय नमः ।

तदंतर्व्यापकं कृत्वा,

कं सर्वसिद्धिप्रदादेव्यै नमः-दक्षनेत्रे ।

खं सर्वसम्पत्प्रदा देव्यै नमः — नासामूले ।

गं सर्वप्रियंकरी देव्यै० — वामनेत्रे ।

घं सर्वमंगलकारिणी देव्यै० — वामबाहुमूले ।

ङं सर्वकामप्रदादेव्यै नमः ५ वामोरुमूले ।

चं सर्वदुःखविमोचिनी देव्यै० — वामजानुनि ।

छं सर्वमृत्युप्रशमनी देव्यै० — गुदे ।

जं सर्वविघ्नविनाशिनी देव्यै० — दक्ष जानुनि ।

झं सर्वांगसुन्दरी देव्यै — दक्षोरुमूले ।

ञं सर्वसौभाग्यदायिनी देव्यै० — दक्षबाहुमूले ।

ततः अन्तर्दशारचक्राय नमः ।

इति तदंतर्व्यापकं विन्यस्य,

मं सर्वज्ञादेव्यै० — दक्षनासापुटे ।

यं सर्वशक्तिदेव्यै० — दक्षसृक्कीण्यां ।

रं सर्वैश्वर्य प्रदायिनि देव्यै० — दक्ष स्तने ।

लं सर्वज्ञानमयी देव्यै० — दक्षमुष्के ।

बं सर्वव्याधिविनाशिनी देव्यै० — सीवन्यां ।

शं सर्वाधारस्वरूपा देव्यै० — वाममुष्के ।

षं सर्वपापहरा देव्यै० — वामस्तने ।

सं सर्वानन्दमयी देव्यै० — वामसृक्किण्यां ।

हं सर्वरक्षास्वतंरूपिणी देव्यै० — वाम नासापुटे ।

क्षं सर्वेप्सित फलप्रदा देव्यै० — नासाग्रे ।

ततः अष्टकोण चक्राय नमः

इति तदंतर्व्यापकं विन्यस्य अब्जां १६ ।

ब्लूं वशिनि वाग्देवतायै नमः ।

चिवुकदक्ष भागे ।

कं ५ क ल ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवतायै० — कंठदक्षभागे ।

चं ५ क्लींव्यो देवी वाग्देवतायै० — हृदये ।

टं ५ प्लूं विमला वाग्देवतायै नमः — नाभिदक्षभागे ।

तं ५ झ्म्रीं अरुणी वाग्देवतायै० नमः — नाभिवामभागे ।

पं ५ ह् स् ल् व्यूं जयिनिवाग्देवतायै० — हृद्वामभागे ।

१४ इम्र्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवतायै० — कंठवामे ।

शं ६ क्ष्त्रीं कौलिनी वाग्देवतायै० — चिबुकवाम भागे ।

ह्रां ह्रीं क्लीं ब्लूं सः यां रां लां वां सर्वजंभृनेभ्यो

वाणेभ्यो० — हृन्निमनाधः ।

धं थं सर्वमोहनाभ्यां चापाभ्यां नमः — हृद्वामे ।

आं ह्रीं सर्ववशीकरणाभ्यां पाशाभ्यां नमः — निम्नोर्ध्वं ।

क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां अंकुशाभ्यां नमः — तद्दक्षभागे ।

ततः त्रिकोणचक्राय नमः ।

इति हृदि व्यापकं विन्यस्य —

कं कामेश्वर्यै नमः — त्रिकोणाग्रकोणे ।

ह ६ वज्रेश्वर्यै नमः — दक्षकोणे ।

सः ४ भगमालिन्यै नमः — उत्तरकोणे ।

ततः विन्दुचक्राय मूलं० श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।

इत्यणिमादिचक्र न्यासः ।

अथ मूलदेव्यादिन्यासः ।

विन्दुचक्राय नमः ।

इति शिरस्थ त्रिकोणे ब्रह्मरन्ध्ररूप विंदौ व्यापकं कृत्वा ।

मूलं श्री महात्रिपुरसुन्दर्यैः ०

ततः त्रिकोणचक्राय इति तद्बहिर्व्यापकं कृत्वा ।

क ५ कामेश्वर्यै० — अग्रकोणे ।

ह ६ वज्रेश्वर्यै नमः — दक्ष कोणे ।

स ४ भगमालिन्यै० — वाम कोणे ।

ततस्त्रिकोणचतुर्दिक्षु० ।

ह्रांँ ह्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्व जंभनेभ्यः कामेश्वरी वाणेभ्यो नमः —

— वाम नेत्रे ।

धं सर्वसंमोहनाय कामेश्वरचापाय नमः — दक्षभ्रुवि ।

आं सर्व वशीकरणाय कामेश्वर पाशाय० दक्षकर्णे ।

ह्रीं सर्ववशीकरणाय कामेश्वरी पाशाय० — वामकर्णे ।

क्रों सर्वस्तम्भनाय कामेश्वरांकुशाय० —

— दक्षनासापुटे ।

क्रों सर्वस्तम्भनाय कामेश्वर्यांकुशाय नमः — वामनासापुटे ।

ततः अष्टकोणचक्राय नमः ।

इति शिरसि व्यापकं विन्यस्य ललाटादिप्रादक्षिण्येन वाग्देवताष्टकं न्यसेत्।

अं १६ ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः ।

कं ५ क ल ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवता० ।

चं ५ न्ब्लीं मोदिनी० ।

टं ५ ल्यूं विमला वा० ।

तं ५ ज्म्रीं अरुणा वा० ।

पं ५ हसल् व्यूं जयिनी वा० ।

यं ४ झ्यूं सर्वेश्वरी वा० ।

शं ६ क्ष्म्रीं कौलिनी वागे० ।

ततः अन्तर्दशार चक्राय०

इति नेत्रादि प्रादक्षिण्येन व्यापकं कृत्वा —

सं सर्वज्ञा देव्यै नमः — दक्षनेत्र मूले ।

यं सर्वशक्ति देव्यै० — दक्षापांगे ।

रं सर्वैश्वर्यप्रदादेव्यै० — दक्षकर्णपूर्वभागे ।

लं सर्वज्ञानमयी दे० — दक्षकर्णोत्तरभागे ।

वं सर्वव्याधिविनाशिनी दे० — अपरगलनिम्नदक्षभागे ।

शं सर्वाधारस्वरूपा दे० — उत्तर भागे ।

षं सर्वपापहरा देव्यै ० — वामकर्णपृष्ठभागे ।

सं सर्वानन्दमयी देव्यै० — उत्तरभागे ।

हं सर्वरक्षास्वरूपिणी देव्यै० — वामापाङ्गे ।

क्षं सर्वेप्सितफलप्रदायै० — वामनेत्रमूले ।

ततः वहिर्दशारचक्राय नमः ।

इति कंठमूले व्यापकं कृत्वा —

कं सर्व सिद्धिप्रदादेव्यै० — कंठमूले तत्प्रादक्षिण्येन् ।

खं सर्वसम्पत्प्रदा देव्यै० ।

गं सर्वप्रियंकरि देव्यै० ।

घं सर्वमंगलकारिणी देव्यै० ।

ङं सर्वकामप्रदा देव्यै० ।

चं सर्वदुखविमोचिनी देव्यै० ।

छं सर्वमृत्युप्रशमनी दे० ।

जं सर्वविध्नविनाशिनी देव्यै० ।

झं सर्वाङ्गसुन्दरी दे०।

ञं सर्वसौभाग्यदायिनी दे० ।

ततश्चतुर्दशारचक्राय ।

इति हृदि व्यापकं विन्यस्य प्रादक्षिण्येन न्यसेत् ।

टं सर्वसंक्षोभिणी शक्त्यै न० ।

ठं सर्वविद्राविणी शक्तयै न० ।

डं सर्वाकर्षिणी शक्त्यै० ।

ढं सर्वाह्लादिनी श० ।

णं सर्वसंमोहिनी श० ।

तं सर्वस्तंभिनी श० ।

दं सर्ववशंकरि श० ।

धं सर्वरंजनीशक्त्यै नमः ।

नं सर्वोन्मादिनी शक्त्यै नमः ।

थं सर्वजंभिनी श० ।

पं सर्वार्थसाधिनी शक्त्यै नमः ।

फं सर्वसम्पत्तिकारिणी शक्त्यै० ।

बं सर्वमन्त्रमयी शक्त्यै० ।

भं सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी शक्त्यै० ।

ततः अष्टदलपद्माय नमः ।

इति नाभौ व्यापकं कृत्वा ।

कं ५ अनंगकुसुमायै नमः — पृष्ठवंशे ।

पं ५ अनंगमेखलायै नमः — वाम पार्श्वे ।

टं ५ अनंग मदनायै० — उदरे ।

तं अनंगमदनातुरायै० — दक्षपार्श्वे ।

पं अनंगरेखायै० — पृष्ठवंशवामपार्श्वेअन्तराले ।

टं ५ अनंग मदनायै० — उदरे ।

तं अनंगमदनातुरायै० — दक्षपार्श्वे ।

पं अनंगरेखायै०— पृष्ठवंशवामपार्श्वेअन्तराले ।

यं ४ अनंगवेगिन्यै० वामपार्श्वोदरांतराले ।

शं ४ अनंगांकुशायै० — उदरदक्षपार्श्वांतराले ।

लं क्षं अनंगमालिन्यै० — दक्षपार्श्वपृष्ठांतराले ।

ततः षोडशदलपद्माय० ।

इति स्वाधिष्ठानेव्याप्य पूर्वदलमारभ्य प्रादक्षिण्येन दलेषु न्यसेत्।

अं कामाकर्षिणी नित्याकलायै० ।

आं बुध्याकर्षिणी नित्याकलायै० ।

इत्यादि ।

ततः मूलाधारे भूपुरचक्रं विचिंत्य चतुरस्रांत्यरेखायै० इति विन्यस्य—

द्रां सर्वसंक्षोभिणी मुद्रायै० पुरो भागे ।

द्रीं सर्व विद्राविणी मुद्रायै० — दक्षिणभागे ।

क्लीं सर्वाकर्षिणी मु० वंशे ।

ब्लूं सर्ववशंकरीमु० — वाम पार्श्वे ।

सः सर्वोन्मादिनी मुद्रायै — प्राग्दक्षिणां तराले ।

क्रों सर्वमहांकुशमुद्रायै० —दक्षिणप्रतीच्यांतराले ।

ह् स् खू फ्रें सर्वखेचरीमुद्रायै० — प्रत्यगुदगंतराले ।

ह्सौः सर्वबीज मु० — ईशान्यां ।

ऐं सर्वयोनि मु० — तदूर्ध्वं ।

ह स्रै ह् स् क् ल् ह्रीं ह स्रोः सर्वत्रिखण्डा

मु० — तदधः ।

ततः चतुरस्रमध्यमरेखायै०

इति दक्षिणजंघायां व्यापकं विन्यस्य० प्रागादिदिक्षुविदिक्षु च ।

ब्राह्मयादीन्नयसेत् ।

ब्राह्मीमातृकायै नमः — जंघापुरोभागे ।

माहेश्वरी मातृकायै० ---- तद्दक्षे ।

कौमारी मातृकायै० — तत्पश्चात् ।

वैष्णवी मातृकायै नमः — तद्वामे ।

वाराही मातृकायै० — तत्प्राग्दक्षांतराले० ।

इंद्राणी मातृकायै० — तद्दक्षपश्चांतराले ।

चामुंडामातृकायै० — तत्पश्चिमदिगंतराले ।

ततश्चतुरस्त्र प्रथम रेखायै नमः ।

इति वाम जंघायां व्यापकं विन्यस्य —

अणिमासिध्यै नमः — पुरतः ।

लघिमासिध्यै नमः — तद्वामे ।

महिमासिध्यै नमः — तत्पश्चात् ।

इशित्वासिध्यै नमः — तद्दक्षे ।

वशित्वासिध्यै नमः — तत्प्राग्वामांतराले ।

प्राकाम्यासिध्यै० — तद्वामपश्चांतराले ।

भुक्तिसिध्यै० — तत्पश्चिमदक्षांतराले ।

इच्छासिध्यै० —तद्दक्षपूर्वांतराले ।

प्राप्तिसिध्यै० — वामपादतले ।

सर्वकामसिध्यै० — दक्षपादतले ।

इति सृष्टिचक्र न्यासः ।

अथकरशुध्यायादिन्यासः

अं मध्यमाभ्यां० ।

आं अनामिकाभ्याम्० ।

सौः कनिष्ठिकाभ्याम्० ।

अं अंगुष्ठाभ्याम्० ।

आं तर्जनीभ्याम्० ।

सौः करतलकरपृष्ठाभ्याम्० ।

इतिकरशुद्धिन्यासः ।

ह्रीं क्लीं सौः देव्यात्मासनाय० । पादयोः ।

है हूं क्लीं ह्स्रौः श्रीचक्रासनाय० — जंघयोः ।

ह्स्रैं ह स्क्लीं ह सौः सर्वमन्त्रासनाय-जानुनोः ।

ह्रीं क्लीं क्लें साध्यसिद्धाय० — मूलाधारे ।

इति चतुरासन न्यासः ।

ऐं हृदया० तर्जन्यादिभिस्त्रिर्हृदये ।

क्लीं शि० मध्यमानामिकाभ्या० — शिरसि ।

सौं० शिखायै वषट् ।

अधोमुखांगुष्ठेन मुष्टिना शिखायां ऐं कवचाय हुं दशभिः कवचं

क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

तर्जन्यादिभिस्त्रिभिर्नेत्रत्रये ।

सौः अस्त्राय फट् ।

तर्जनीमध्माभ्यामस्त्रं ।

इति रक्षाषडंगं न्यासः

अथ वाग्देवतान्यासः

अं १६ ब्लूं वशिनीं वाग्देवतायै नमः — शीर्षादिललाटांतम् ।

कं ५ क ल ह्रीं कामेश्वरी वाग्देव० — ललाटादिभ्रूमध्यांतम्।

चं न्क्लीं मोदिनी वा० भ्रूमध्यादाकंठम् ।

टं प्लूं विमलावाग्देव० कंठादिहृदयांतम् ।

तं ५ ज्प्रीं अरुणावाग्देवता० हृदयान्नाभ्यांतम् ।

पं ह ल् ल्यूं जयिनीवा० — नाभ्यादिस्वाधिष्ठनांतम् ।

यं झ्रयूंसर्वेश्वरी वा०— स्वाधिष्ठानादिमूलाधारांतम् ।

शं ६ क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देव०— मूलाधारादिपादांतम् ।

अथ नवयोनिन्यासः

कं ५ नमः — वाम कर्णे ।

ह ६ नमः — दक्ष कर्णे ।

स ४ नमः — चिबुके ।

१ क नमः — वामशंखे ।

हं नमः — दक्षशंखे ।

स — आस्ये ।

२ क — वाम नेत्रे ।

ह — दक्ष नेत्रे ।

स ४ — नासायां ।

क ३ — वामांशे ।

ह — दक्षांसे ।

स — हृदि ।

क — वामकूपरि ।

ह ६ — दक्षकूपरि ।

स ४ — कुक्षौ

५ क ५ — वाम जानुनि ।

ह — दक्ष जानुनि ।

स ४ — अधः ।

क — वाम पादे ।

ह ६ — दक्ष पादे ।

स ४ — लिंगे ।

क ५ — वाम पार्श्वे ।

ह ६ — दक्ष पार्श्वे० ।

स ४ — हृदि ।

८ क ५ — वामस्तने ।

ह ६ — दक्षस्तने ।

सकल ह्रीं नमः — कंठे ।

इति योनि न्यासः ।

अथ विद्याक्षर न्यासः

कं नमः — मूर्ध्नि ।

एं नमः — गुह्ये ।

ईं नमः— हृदि ।

लं नमः — वामनेत्रे ।

ह्रीं नमः — दक्षनेत्रे ।

हं नमः — तृतीयनेत्रे ।

सं नमः — वामश्रोत्रे ।

कं नमः — दक्ष श्रोत्रे ।

हं नमः — मुखे ।

लं नमः — वामभुजे ।

ह्रीं नमः — दक्षभुजे ।

सं नमः — पृष्ठे ।

कं नमः — वाम जानुनि ।

ह्रीं नमः — नाभौ ।

इति विद्याक्षर न्यासः ।

इतः पुनः करशुध्यादिन्यासं चतुरासनं न्यासं रक्षाषडंगन्यासं च कुर्यात् । ततः

श्री कंठादिन्यासः

अस्य श्रीकंठादिमातृकान्यासस्य दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः — शिरसि

गायत्री छंदसे नमः — मुखे ।

अर्धनारीश्वराय देवतायै नमो — हृदि ।

हल्भ्यो बीजेभ्यो — गुह्ये ।

स्वरेभ्यो नमः — पादयोः ।

विन्दुभ्यः कीलकाय नमः — सर्वाङ्गे ।

न्यासे विनियोगाय नमः करसंपुटे ।

ह्रां अंगुष्ठाभ्याम् नमः ।

ह्रीं तर्जनीभ्याम्० ।

ह्रूं मध्यमाभ्याम्० ।

ह्रैं अनामिकाभ्याम्० ।

ह्रौं कनिष्ठिकाभ्याम् ।

ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्याम्० एवं हृदयादि ।। ध्यानं —

पाशांकुशवरास्रक्पाणिंशीतांशुशेखरम् ।

त्र्यक्षंरक्तसुवर्णाभमर्धनारीश्वरं भजे ।।

ह्रौं अं पूर्णोदरियुक्ताय श्रीकंठेशाय नमः — मुखे ।

स्थानमुद्राश्च मातृकावत् ।

झौं आं विरजायुक्तायानंतेशाय नमः ।

झ्रौ इं शाल्मली युक्ताय सूक्ष्मेशाय नमः ।

ईं लोलाक्षीयुक्तायाधीशाय नमः ।

उं वर्तुलाक्षी युक्तायामेशाय नमः ।

ऊं ऊर्ध्वाधिकोणायुक्तायार्ध ईशाय नमः ।

ऋं दीर्घमुखीयुक्तायभारतीशाय नमः ।

ॠं गोमुखीयुक्ताय तिथीशाय नमः ।

लृं दीर्घ जिह्वायुक्ताय स्थाण्वीशाय नमः ।

ॡं कुंडोदरियुक्ताय हरेशाय नमः ।

एं वं ऊर्ध्वकेशियुक्ताय झिंटीशाय० ।

ऐं विकृतमुखी युक्तायसौतिकेशाय नमः ।

ओं ज्वालामुखीयुक्ताय सद्योजातेशाय० ।

औं उल्कामुखी युक्तायानुग्रहेशाय नमः ।

अं श्रीमुखीयुक्तायाक्रूरेशाय नमः ।

अः विद्यामुखीयुक्ताय महासेनेशाय न० ।

कं महाकाली युक्ताय क्रोधीशाय नमः ।

खं सरस्वतीयुक्ताय चंडेशाय नमः ।

गं सर्वसिद्धिगौरीयुक्ताय पंचांतकेशाय नमः ।

घं त्रैलोक्य विद्यायुक्ताय शिवोत्तमेशाय न० ।

ङ मंत्रशक्तियुक्ताय एकरुद्रेशाय न० ।

चं आत्मशक्तियुक्ताय कूर्मेशाय नमः ।

छं भूतमातृकायुक्ताय एकनेत्रेशाय नमः ।

जं लम्बोदरि युक्ताय चतुराननेशाय नमः ।

झं द्राविणीयुक्तायाजेशाय० ।

ञं नागरीयुक्ताय शर्वेशाय० ।

टं खेचरीयुक्ताय सोमेशाय० ।

ठं मंजरीयुक्ताय लांगलीशाय० ।

डं रूपिणीयुक्ताय दारुकेशाय न० ।

ढं वारिणी युक्तायार्धनारीशाय नमः ।

णं काकोदरियुक्ता उमाकांतेशाय नमः ।

तं पूतनायुक्तायाषाढ़ीशाय० ।

थं भद्राकालीयुक्ताथ दंडीशाय नमः ।

दं योगिनीयुक्तायत्रीशाय नमः ।

धं शंखिनीयुक्ताय मीनेशाय नमः ।

नं गर्जनीयुक्ताय मेषेशाय० ।

पं कालरात्रियुक्ताय लोहितेशाय० ।

फं कुब्जिनीयुक्ताय शिखीशाय० ।

बं कपर्दिनीयुक्ताय गलंडेशाय० ।

भं वज्रपाणी युक्ताय द्विरंडेशाय० ।

यं सुमुखीयुक्तायवालीशाय० ।

रं रेवती युक्ताय भुंजगेशाय० ।

लं माधवीयुक्ताय पिनाकीशाय० ।

वं वारिणीयुक्ताय खड्गीशाय० ।

शं वायवीयुक्ताय बकेशाय०

षं रक्षोवधीरिणीयुक्ताय श्वेतेशाय० ।

सं सहजायुक्ताय भग्वीशाय० ।

हं लक्ष्मीयुक्ताय कुलीशाय न० ।

लं व्यापिनी युक्ताय शिवेशाय नमः ।

क्षं महामायायुक्तायसंवर्त्तकेशाय० ।

इति श्रीकण्ठादि न्यासः ।

इतः पुनर्वाग्देवतान्यासं कुर्यात् ।

अथ अग्निचक्रादि न्यासः

क ५ अग्निचक्रेकामरूपपीठे मित्रेशनाथात्मिके जाग्रद्दशाधिष्ठाये च्छाशक्त्यात्मक रुद्रात्मशक्ति श्रीकामेश्वरी देव्यै न० मूलाधारे।

ह ६ सूर्यचक्रे जालंधरपीठेषष्ठीशनाथात्मके स्वप्नद शाधिष्ठाय-कज्ञानात्मक श्रीविष्णवात्मशक्ति श्रीबज्रेश्वरी देव्यै नमः-हृदये ।

स ४ सोमचक्रे पूर्णागिरिपीठे उड्डीशनाथात्मके सुषुप्तिदशाधिष्ठायक क्रियाशक्त्यात्मक ब्रह्मात्मकशक्ति श्री भगमालिनी देव्यै नमः ।

आज्ञायां मूलं समस्तब्रह्मचक्रे ओड्याणपीठे चर्यानन्दनाथात्मके तुर्यदशाधिष्ठायक परब्रह्मात्मशक्तिश्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देव्यै नमः ब्रह्मरन्ध्रे।

इत्यग्निचक्रादि न्यासः ।

पर न्यासः

क ५ आत्मतत्त्वाय० पादादिनाभ्यंतम् ।

ह ६ विद्यातत्त्वाय० नाभ्यादिगलांतम् ।

स ४ शिवतत्त्वाय० कंठादिशिरोंतम् ।

मूलं तत्त्वाय नमः व्यापकम् ।

इति तत्त्वन्यासः।

ततोमूलाधारस्य कुंडलिनीं सहस्रारस्थामृतं कुंडलिं न्यासं मेल्य तदगलित सौम्याग्नेयामृतधारासारैरानंदानुभवं विभावयेत् ।

इति परन्यासः।

अथ चक्रेश्वरी न्यासः ।

अं आं सौः पादाग्रयोः ।

ऐं क्लीं सौः जंघयोः ।

ह्रीं क्लीं सौः जानुनोः ।

मूलेन सर्वांगे व्यापकं न्यसेदिति न्यासांतरमाह ।

अं आं सौः त्रिपुरासहिताय त्रैलोक्यमोहनचक्राय० अकुले ।

ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेश्वरीसहिताय सर्वाशापरिपूरक चक्राय० ।

ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरी सहिताय सर्वसंक्षोभण चक्राय० ।

हैं ह क्लीं ह्रौः त्रिपुरवरासिनी सहिताय सर्व सौभाग्यदायकचक्राय स्वाधिष्ठाने ।

त्झैं त्झ्क्लीं त्झौः त्रिपुराश्रीसहिताय सर्वार्थसाधकचक्राय० मणिपूरे ।

ह्रीं क्लीं क्लें त्रिपुरमालिनी सहिताय सर्वरक्षाकरचक्राय० अनाहते ।

लू रीं ह त्रिपुराम्बिकासहिताय सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः इंद्रयोर्न्यंबा मूलं महात्रिपुरसुन्दरीसहिताय सर्वानन्दमय चक्राय० आज्ञायां ।

इति करशुध्यादि षोडशन्यासः ।

अथ महाषोढ़ान्यास :

षोडशाक्षर्युपासकानां तु कश्चिद्विशेषः मातृकान्यासास्त्रयो ऋष्यादयो द्वाविंशतिः।

पूर्वाषोढ़ान्यासश्चेत्येकत्रिंशन्यासान्कृत्वा०

सौभाग्यादि द्वादश न्यासं कुर्यात् ।

सौभाग्यादि द्वादश न्यासः

स्रवत्सुधां षोडशार्णां सम्पूर्णां विद्यां ब्रह्मरन्ध्रे ।

विचिंत्य वामांसे मुक्त तर्जनीकं करं भ्रामयित्वा ।।

गर्भितांगुष्ठमुष्टि पादयोर्न्यस्य त्रैलोकस्याहं
कर्त्रींति संचित्य मुष्टिं तिलके न्यसेत् ।।

इति सौभाग्य न्यासः ।

अथ त्रैलोक्य क्षोभणन्यासः

छं छं छं ऊँ छं छं छं ऊँ छं छं छं छं छं छं सम्पूर्णविद्या व्यापकत्वेन वदने० २ मूलं गलादि शिरोंतं मूलं गलादापदं ततो योनिमुद्रां मुखे न्यस्य नमस्कुर्यात् ।

इति त्रैलोक्य क्षोभण न्यासः ।

अथ सम्मोहनन्यासः

३ ३ दक्षहस्ताद्यनामिकां परितो मूर्धानं परिभ्राम्य० मणिबन्धे न्यस्य वामहस्तीयामपि अनामिकाभ्यां तथैव दक्षिणमणिबन्धे न्यस्य पुनर्दशहस्तीयां ब्रह्मरन्ध्रे न्यस्य ललाटे तां क्षिप्त्वा त्रैलोक्यमरुणं ध्यायन् सम्पूर्णं मूलं मनसा स्मरेत् ।

इति सम्मोहन न्यासः ।।३४।।

अथाक्षरशोन्यासः

संहार न्यासः

२ श्रीं नमः पादयोः

२ ह्रीं नमः जंघयोः ।

२ क्लीं नमः जान्वोः ।

२ ऐं नमः कप्योः ।

२ सौ नमः लिङ्गे ।

२ ऊँ नमः पृष्ठे ।

२ ह्रीं नमः नाभौ ।

२ श्रीं नमः पार्श्वयोः ।

२ कं नमः स्तनयोः ।

२ हं ६ नमः अंसयोः ।

२ सं ४ नमः कर्णयोः ।

२ सौः नमः ब्रह्मरन्ध्रे ।

२ ऐं नमः वदने ।

२ क्लीं नमः चक्षुषोः ।

२ ह्रीं नमः कर्णोपरि भागयोः ।

श्रीं नमः व्यापकत्वेन करयोः ।

पादयोर्जघयोर्जान्वोःस्कंधे लिंगे च पृष्ठके ।

नाभौ च पार्श्वयोश्चैव स्तनयोरुरसिस्तत ः ॥

कर्णयोर्ब्रह्मरंध्रे च वदने चैव चक्षुषोः ।।

कर्णोर्ध्वभागयोश्चैव करयोर्व्यापकत्वतः ।।

स्थानेषु षोडशस्वेषु षोडशैकैकमक्षरम् ।

नमोंतं विन्यसेल्लज्जारमाबीजादिकं बुधः ।।

इति संहार न्यास ।।३५।।

अथ सृष्टिन्यासः

ब्रह्मरन्ध्रे ललाटे च नेत्रयोः कर्णयोर्नसोः ।

ओष्ठयोरधरे दंते दंतोर्ध्व रसनेन्द्रिये ।।

चोरकूर्पे च पृष्ठे च सर्वाङ्ग हृदये स्तने ।

कुक्षौ लिङ्गे न्यसेत् वर्णान् पूर्ववत् सुटितान्बुधः ।.

प्रयोगपूर्ववत् क्रियताम् ।

इति सष्टि न्यासः ।।३६।।

अथ स्थिति न्यासः

करांगुष्ठयुग्मेन ब्रह्मरन्ध्रे मुखे हृदि ।

नाभ्यादि पाद पर्यन्तं गलान्नाभ्यंतं मे बचः ।।

पूर्वादिकं ठं पर्यन्तं पादांगुष्ठादि पंचसु ।

पूर्ववद्विन्यसेत् वर्णान्स्थिति न्यासोऽयमीरितः ।।

ह्रीं श्रीं श्रीं नमः करांगुष्ठयोः ।

२ ह्रीं नमः तर्जन्योः ।

ऊँ क्लीं नमःकरमध्यमयोः ।

इत्यादि रीत्या प्रयोगो द्रष्टव्यः ।

इति स्थितिन्यासः ।।३७।।

अपर सौभाग्यन्यासः

मूर्ध्निनेत्रेवाम नेत्रे दक्षिणी नयने ।

वाम कर्णे दक्ष कर्णे वामनासापुटे।

ततः दक्षनासापुटे वामगंडे च दक्षिणे ऊर्ध्वोष्ठे वाधरोष्ठे च मुखान्ते चोर्ध्वदन्तयोः अधोदंत द्वयेव वक्रेवर्णान्वै पूर्ववन्नयसेत्।

इत्यपरः सौभाग्य न्यासः ।।३८।।

मुखकरन्यासः

ऊँ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं क ५ ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह ६ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं ह क ल ऐं ह्रीं ह क ह ल ह्रीं ह ए क ल ह्रीं ऊँ ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं क ह ल ए ह्रीं क ह य ल ह्रीं क ह ह ल ह्रीं हंसः ऊँ ह्रीं श्रीं हूं सोहं सः ४ इति दीपिनि

ब्रह्मरन्ध्रे च सीमन्ते ललाटे च भ्रुवोर्नसोः ।

मुखेदक्षिणांगस्थे जत्रुदेशे च कूर्पयोः ।।

प्रकोष्टेंऽगुलिमूलेंऽगुल्यग्रेऽथो वामभागयोः ।
जत्रादिपंचके वर्णान्पूर्वरद्विन्यसेत् सुधीः ।।

इति मुखकर न्यासः ।।३९।।

मुखपाद न्यास

ब्रह्मरन्ध्रे च सीमन्ते ललाटे हृदये मुखे ।
जिह्वायामथ दक्षांगस्योरौ जानुनि गुल्फके ।।
अंगुलीनां च मूलाग्रे वामे पूर्वादि पंचसु ।
एकैकशो न्यसेत् वंर्णान्पूर्ववत्सुटितान्बुधः ।।

इति मुखपादन्यासः ।।४०।।

वक्रन्यासः

अथ वक्रे स्वर स्थाने मातृका न्यासः न्यसेत् ।।

इति वक्रन्यासः ।

महासौभाग्यन्यासः

ललाटे गले हृन्नाभिमूलेषु ब्रह्मरन्ध्रके ।
मुखे वस्तौ च मूले च हृदये ब्रह्मरन्ध्रके ।
दक्षहस्ते वामहस्ते दक्षांध्रौ वामपादके ।
हृदये च न्यसेद्वर्णान्पूर्बवत्सुटितान् सुधीः ।।

इति सौभाग्यन्यासः ।।४२।।

ततो हृल्लेखारमाद्यां नमोंतासं पूर्णां विद्यां हृदये न्यसेत् ।

इति णोडशार्णं न्यसेत् ।।४३।।

ततः पूजापीठपूजां न्यासं पूर्वोक्तं कूर्यात् एवं शोडश्युपासकानां चतुश्चत्वारिंशं न्यासाः नित्या ।

ततः अन्तर्यागः पूर्ववत् नित्यजपेतु विशेषः कुल्लुका सेतु महासेतु निर्वाणो कीलन संजीवन प्राणदीपन पूर्ववज्जप्त्वा ।

कामेश्वर मन्त्र —

ऐं क्लीं सौः ऊँ श्रीं ह्रीं ह स क्ष म ल यूं स ह क्ष म ल ब र यूं य र ल व क्ष म यूं ऊँ ह्रीं श्रीं औं सौः क्लीं ऐं ।

इति चतुस्त्रिंशदक्षरं कामेश्वरमन्त्र मुक्तपक्षेषु यथाशक्ति जपेत् ।ततः पंचदशीं त्रिर्जपेत् ।

ततः षोडशीं त्रिः ।

ऐं सौः क्लीं वालायै नमः ।— इत्यष्टाक्षरवालामन्त्रं त्रिः

ऐं क्लीं उच्छिष्ट चांडालिनी सुमुखी देवी महापिशाचिनी ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा ।।

इति षडिवंशत्यक्षरं सुमुखि मन्त्रं त्रिः ।

उग्रतारा:

ऊँ ह्रीं स्त्रीं हूं क्रीं श्रीं उग्रतारे सौः क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा

इति षोडशार्णां उग्रतारा मंत्रं त्रिः जपेत् ।

एतें पंशदश्यादयः पंच मंत्राः पंचरत्न पदेन मन्त्रशास्त्रे व्यवह्रीयन्ते ।

ततः सूतकापहाराय प्रणवपुटितां षोडशीं सप्तवारं जपेत् ।

एवं सर्वाङ्गभूताः पंचदश मन्त्राः जप्तव्याः जपोत्तर नवमुद्राः प्रदर्श्य दशमत्रिखण्डा मुद्राशेषं पूर्ववत् ।।

इति श्रीनृसिंहानन्दनाथशिष्येण भासुरानन्दनाथेन विरचिते श्रीमहात्रिपुर सुन्दरीवरिवस्याविधौ षोडशी न्यासादि निरूपणम् ।

———— : ————